मंदिर का हाथी

अंतर्भारतीय पुस्तकमाला

मंदिर का हाथी

(नाटक)

ओमचेरी एन. एन. पिल्लै

अनुवाद

एच. बालसुब्रह्मण्यम

एकः सूते सकलम्

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

आवरण : बलदेव महारथा की पेंटिंग पर आधारित

ISBN 81-237-2927-8

पहला संस्करण : 1999 *(शक 1921)*

Original Title : Thevarute Aana *(Malyalam)*
Translation : Mandir Ka Hathi *(Hindi)*

रु. 25.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क
नई दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित

आमुख

केरल की माटी से दूर रहकर अपेक्षाकृत कम संख्या में नाटक लिखने के बावजूद गत चार दशकों में मलयालम रंगमंच पर दृश्यमान प्रवृत्तियों पर नाट्य-रचना व उनके सफल मंचन के माध्यम से केरल में तथा प्रवासी मलयाली जनता में नई नाट्य-अवधारणा विकसित करने का श्रेय ओमचेरी नारायण पिल्लै को जाता है जो 'ओमचेरी' के संक्षिप्त नाम से जाने जाते हैं। ओमचेरी के नाटकों से रू-ब-रू होते हुए पिछले चार दशकों में मलयालम रंगमंच के कालक्रमानुसार विकास का परिचय मिलता है। यह सचमुच विस्मय का विषय है कि उनकी प्रारंभिक कृतियां आज भी रंगमंच के प्रेमियों को अच्छी लगती हैं। 'दैवम वीण्डुम तेट्टिद्धरिक्कुन्नु' (ईश्वर फिर गलतफहमी में है) और 'उलकुटय पेरुमाल' (लोकपति)—इन दो नाटकों का मंचन इस बात को साबित करता है कि नाट्य की हर विधा में और प्रत्येक प्रवृत्ति में ओमचेरी सहज अविजेय हैं। रंगमंच में नई युक्तियों के प्रयोक्ता, निर्देशक, पारंपरिक रंगकर्मी तथा ऐसे नाट्य-रसिक जो सी.वी. और ई. वी. द्वारा प्रवर्तित प्रहसनों के शिष्ट हास्य का आस्वाद करना चाहते हैं—सबको ओमचेरी की लेखनी समान रूप से संतुष्ट करती है। इस प्रकार प्रत्येक प्रवृत्ति और परंपरा के उत्कर्ष काल में उनके द्वारा रचित नाटकों की सूची में सबसे निराली कृति है 'थेवरुटे आना' (मंदिर का हाथी); जो इस दृष्टि से अनोखी मानी जाती है कि संपूर्ण भारत के विभिन्न केंद्रों में इस नाटक ने विविध और विलक्षण प्रतिमानों का सृजन किया है। कृति का परिचय देने से पहले कृतिकार के संबंध में दो शब्द कहना आवश्यक है।

एक कवि के रूप में अपने साहित्यिक जीवन का श्रीगणेश करने वाले ओमचेरी ने नाट्य-क्षेत्र में इस आत्म विश्वास के साथ कदम रखा कि इस क्षेत्र में उनके अवदान से मलयालम नाट्य-मंच नई बुलंदियों को छुएगा। सन् 1957 में रचित उनका एकांकी-संग्रह 'ओप्पत्तिनोप्पम' (नहले पर दहला) इसका प्रमाण है। इस संग्रह की प्रत्येक एकांकी मलयालम की प्रहसन-परंपरा के प्रमुख अंशों को आत्मसात किए हुए है। इसके बाद अगला एकांकी-संग्रह 'दैवम वीण्डुम तेट्टिद्धरिक्कुन्नु' वर्षों के अंतराल के बाद

सामने आया। इस संग्रह के नाटक साबित करते हैं कि पारंपरिक प्रहसन-शैली से हटकर, दर्शकों को हंसाने के साथ चिंतन करने को मजबूर करने वाली एक लघु नाट्य-शैली के निर्माण में ओमचेरी सिद्धहस्त हैं। कुछेक नाट्यकारों की तरह हर साल एक नया नाटक पेश करने की आदत ओमचेरी में नहीं है, बल्कि ये तो अपने पाठकों और दर्शकों को सालों तक इंतजार कराने के बाद ही अपनी नई कृति के साथ प्रकट होते हैं। इनका तीसरा संग्रह भी अनेक वर्षों के अंतराल के बाद आया—वह भी अनेक बार मंचित और पत्र-पत्रिकाओं में प्रशंसित होने के बाद।

रंगमंच में चली आ रही पुरानी घिसी-पिटी परंपरा को बदलकर नई युक्तियों का समावेश करते हुए नए नाटककार जब नाटक लिखने में प्रवृत्त हुए, तब ओमचेरी रंग-कौशल में उन सबसे कहीं आगे पहुंच चुके थे। उनके नाटक अधुनातन तकनीकों के सम्यक प्रयोग में तथा विलक्षण दृश्य-कल्पना में निर्देशकों की प्रतिभा और सूझबूझ को चुनौती देने वाले होते थे। रंगमंच की पूरी संभावनाओं को उजागर करने वाले नाटकों में उल्लेखनीय है 'प्रलयम्'। यह नाटक ऐसे समय में आया जब कुछ उत्साही निर्देशक रंगमंच की पूरी संभावनाओं का प्रयोग करने की चुनौती देने वाले नाटकों के लिए लालायित थे। इसलिए केरल के नाट्य-मंच पर 'प्रलयम्' का जोरदार स्वागत हुआ।

अगले चरण में स्थापित रंगमंचों की आवश्यकता से हटकर नई शैली के नाटक लिखने में चंद नए नाटककार प्रवृत्त हुए। उस समय कुछ नई प्रवृत्तियों और नाट्य-शैलियों का प्रवेश हुआ जिससे नाटककारों का क्षितिज विस्तृत हुआ। उन्हीं दिनों ब्रेख्त की एपिक नाट्य-शैली, अर्थाड की अनुष्ठान नाट्यशैली तथा सैमुएल ब्रेकट की एब्सर्ड नाट्य-शैली भारतीय नाटककारों पर हावी हो रही थीं। इसी के समानांतर भारत की महान दृश्यकला-परंपरा को भुला देने के अपराधबोध-सहित नाट्यकर्मियों का एक समूह अपनी-अपनी माटी से जुड़े रंगमंच की संकल्पना लेकर सामने आया। इस प्रवृत्ति की लहरें पारंपरिक दृश्यकलाओं की भूमि केरल में सर्वाधिक दर्शित हुई। अव्यावसायिक नाट्य-मंच पर निंदा-स्तुति की परवाह किए बिना ढेरों नए नाटक प्रस्तुत हुए जिनके बारे में निश्चित रूप से कहा जा सकता था कि वे अमुक परंपरा या प्रवृत्ति के थे। ऐसे ही माहौल में ओमचेरी अपने नए नाटक 'थेवरुटे आना' (मंदिर का हाथी) के साथ रंगमंच पर आए।

इस नाटक में अलगाव मनोवृत्ति (एलियनेशन) के अलावा निर्देशकों की कल्पना को चुनौती देने वाले कुछ ऐसे तत्व थे जिसके कारण यह नाटक भारत के विभिन्न केंद्रों में वैविध्यपूर्ण शैलियों में मंचित हुआ। निर्देशकों ने—चाहे वे पौराणिक रंग-विधान की अंतःशक्तियों से प्रभावित हों चाहे एब्सर्ड थिएटर शैली के कायल—अपने अपने नजरिए मे इसकी दृश्यकल्पना की। मेरे विचार में 'मंदिर का हाथी' नाटक को अत्यंत आकर्षक

और सर्वप्रिय बनाने वाली दो विशेषताएं हैं। पहला, यह नाटक 'दुर्बोधता' दोष से सर्वथा मुक्त है; उस समय के अनेक नाटकों ने इसी दोष के कारण रंगकर्मियों को अपने से दूर रखा था और दूसरा लोक-आधारित इसकी कथा संरचना में इतनी लचक है कि इसमें सीमित रंग-विधान से लेकर अधुनातन तकनीकों से सज्जित रंग-विधान तक के प्रयुक्ति की संभावना है। इस प्रसंग में उल्लेखनीय है कि यह नाटक अपने उदय-काल में ही अन्यान्य भाषाओं में मंचित हुआ था। आज भी रंगकर्मियों की ओर से प्रयोग और अनुभव के आधार पर इसकी नित नई व्याख्याएं प्रस्तुत की जा रही हैं, इससे स्पष्ट होता है कि नाटक के आकर्षण में कोई कमी नहीं आई है।

सत्तर के दशक में मलयालम रंगमंच को प्रभावित करने वाली प्रमुख धाराओं में से 'मंदिर का हाथी' किस धारा के अंतर्गत आता है—इस पर अभी बहस जारी है। इसका ढांचा केरल का अपना कलारूप 'कथा प्रसंगम्' की शैली पर खड़ा है, इसमें अलगाव मनोवृत्ति (एलियनेशन) का तत्व है; अनुष्ठान नाट्य-परंपरा के प्रति निष्ठा है; निजी माटी की कला का प्रभाव है। इन सबसे परे एब्सर्ड नाट्य-शैली का उत्स भारतीय परंपरा में ढूंढने की प्रवृत्ति भी है। एक काल-विशेष में सर्वाधिक संख्या में मंचन का रहस्य भी यही है। उपर्युक्त में से किसी भी प्रवत्ति को मूल-धारा के रूप में लेकर इसका मंचन संभव है। हर स्थिति में और हर शैली में इसकी प्रतीकात्मकता तथा असंगत नाट्यात्मकता अक्षुण्ण रहेगी। ऐसा चमत्कार कैसे संभव हुआ, इस पर विचार करें।

ऊपर बताया जा चुका है कि एक समय में ओमचेरी दर्शकों को हंसाने के साथ उन्हें सोचने के लिए मजबूर करने के मकसद से नाटक लिखने लगे; इसके लिए उन्होंने अपना एक नया मार्ग बना लिया। उन दिनों भी गहन-गंभीर इतिवृत्तों को लेकर जटिल समस्यात्मक नाटक लिखने में उनकी रुचि नहीं रही, बल्कि वे समाज और घर-परिवार की सामान्य समस्या को लेकर सरल-ललित शैली में रचना करना पसंद करते थे। दर्शकों के मन में चिंतन के प्रतिबिंबों का सृजन करने में उन्हें सफलता मिली। रचना-शिल्प में लालित्य, साधारण दर्शकों की भाषा शैली में समस्या प्रस्तुत करने की कुशलता, लक्ष्य पर वार करनेवाली संवाद शैली, गद्यात्मक कथनों में भी काव्य-ध्वनि स्फुरित करने की निपुणता—इन गुणों के कारण आज भी ओमचेरी के नाटकों को दर्शकों की स्वीकृति प्राप्त है। ठहाके की हंसी की जगह दर्शकों के ओठों पर मुस्कान की लहर दौड़ाना उनका अभीष्ट है।

अंतरालों के दौरान ओमचेरी भले ही नाट्य-रचना में व्यस्त न रहे हों, किंतु निर्देशन और मंचन से जुड़े रंगकर्मी की हैसियत से और प्रबुद्ध दर्शक की हैसियत से वे नाट्य-लोक के साथ जुड़े रहे हैं। इस विकास काल में ओमचेरी पर नई प्रवृत्तियों का नहीं, बल्कि बारी-बारी से अर्जित प्रदर्शक-दर्शक संबंध का प्रभाव पड़ा।

संक्षेप में कहा जाए तो ओमचेरी के अंदर मैं एक ऐसे कृतिकार को देखता हूं जिसने गत दो दशकों में मलयालम रंगमंच पर प्रदर्शक-आस्वादक संबंध के प्रभाव को आत्मसात किया है और जिसने आने वाले समय में रंगमंच के विकास हेतु कृतिकार के अवदान पर बारीकी से चिंतन किया है। उनके अंदर निर्देशक-कलाकार-आस्वादक, इन तीनों का विलय हुआ है। वे न तो बहाव में पड़कर अंध रूप में बहना पसंद करते हैं, न तटस्थ रूप से खड़े होकर समस्याओं का बौद्धिक विवेचन करना। इसके विपरीत वे उपर्युक्त घटक-त्रयी को समन्वित करने वाली दर्शन-सरणि में पहुंच जाते हैं।

नाटक के सारे विवादों के केंद्र में है केशवन नामक हाथी। मेले के कोलाहलमय वातावरण में बहुत सारे हाथियों के बीच में देवमूर्ति मस्तक पर उठाए शान से खड़ा केशवन जब देवता के विग्रह को पुजारी के साथ नीचे गिरा देने का मन बनाता है वहीं से कथा प्रारंभ होती है। इसके फलस्वरूप महावत संकट में पड़ता है और वह केशवन से लट्ठ खिंचवाने का प्रयास करता है। महावत के इस प्रयत्न पर केशवन कड़ा विरोध प्रकट करता है। यहीं से नाटक की समस्या शुरू होती है। मगर नाटक के संबंध में यह सब पूर्व-कथा का भाग है। केशवन की दुख-गाथा (मंदिर के हाथी की व्यथा) पर आधारित कलारूप 'कथा प्रसंगम' के प्रस्तुतीकरण की तैयारी के साथ नाटक शुरू होता है। रिहर्सल का स्थान है मंदिर के आहाते में वटवृक्ष के चबूतरे का परिसर। कथानायक केशवन की अस्वस्थता को रूपायित करने वाला अवसादपूर्ण वातावरण है। दर्शकों के सामने वटवृक्ष का चबूतरा दृश्यमान है। नेपथ्य में स्थित चौराहा, घाट, ताड़ी की दुकान आदि का वर्णन जब नाटककार प्रस्तुत करता है तो पाठकों के सामने केरल का ग्रामीण परिवेश अपनी सारी विशेषताओं के साथ प्रत्यक्ष होता है।

'मंदिर का हाथी' नाटक का जन्म उस समय हुआ जब केरल में मंदिरों के उत्सवों-मेलों के अवसर पर कथा प्रसंगम का प्रदर्शन अनिवार्य माना जाता था। इस प्रकार जल्दी-जल्दी में पर्याप्त तैयारी के बिना प्रस्तुत होने वाले कथा प्रसंगम कार्यक्रम का मजाक उड़ाने की शैली में ओमचेरी द्वारा दिए गए रिहर्सल का दृश्य देखकर केरल के तत्कालीन माहौल का जानकार मान लेगा कि यह दृश्य एकदम सटीक बना है। कथावाचक भास्करन केशवन हाथी की अस्वस्थता का वर्णन करे, इससे पहले नशे में धुत्त होकर मंच पर प्रवेश करता है महावत शंकू नायर। यह रंग-प्रवेश इतना कोलाहलमय बन गया है कि दर्शकों को प्रतीत होने लगता है कि नाटक का बीजारोपण करने वाला शंकू नायर है। इसके बाद ज्यों ज्यों नए पात्रों का प्रवेश होता है नेता, पंचायत अफसर और केशवन की चिकित्सा के लिए नियोजित डाक्टर, ज्योतिषी आदि का—तब तक हाथी की अस्वस्थता की बात हाथी की तरह विशालकाय बन जाती है। अंग्रेजी डाक्टर और ज्योतिपी किट्टु पणिक्कर अपने-अपने ढंग से इलाज बताते हुए एक-दूसरे से उलझते

हैं। उनका वाद-विवाद जब अपनी चरम सीमा पर पहुंचता है, केशवन हाथी जो अभी तक इन सारी बातों का साक्षी बना रहा, दोनों को उठाकर निगल जाता है। डाक्टर और ज्योतिषी के शेष संवाद हाथी के खाली पेट के अंदर से गूंजते हैं, जो वर्षों तक भूखा रखने से खोखला बना हुआ है। दोनों की खोज का परिणाम एक ही रहा, केशवन की बीमारी का कारण भूख है। इस तथ्य के उद्‌घाटन के साथ पर्दा गिरने के बजाए हाथी के पीछे से मल के साथ डाक्टर और ज्योतिषी के गिरने की आवाज आती है। दोनों नग्न रूप में मंच पर दाखिल हो ही रहे थे कि पर्दा गिर जाता है।

बिल्कुल यथार्थ परिवेश में यथातथ्य पात्रों के साथ-साथ हाथी की प्रतिकृति रंगमंच पर लाने, अन्य पात्रों के साथ अंतःक्रिया करते हुए दिखाने तथा उसे संधि तक पहुंचाने में ओमचेरी ने असाधारण शिल्प-कौशल का निर्वाह किया है। नाटककार दर्शकों के मन में यही प्रतीति उत्पन्न करता है कि वास्तव में केशवन नामक हाथी नाटक में भाग ले रहा है। वैविध्यपूर्ण दो शैलियों का निर्वाह लगभग अंत तक चला जाता है। जिस क्षण दोनों का समन्वय कर दिया जाता है, दर्शकों के मन में विभाजन रेखा स्पष्ट हो जाती है और इसके साथ ही उसे इस तथ्य का बोध होता है। यह एक असंगतिपूर्ण नाटक था। यों भावनाओं की टकराहट से आस्वाद में बाधा भी नहीं पड़ती है। नाटककार एक ऐसी परिस्थिति का सृजन करता है जिसमें मंच पर केशवन की उपस्थिति अनिवार्य हो जाती है। यही ओमचेरी की रंग-चातुरी है। जान-बूझकर बनाया गया यह माहौल इतना सहज स्वाभाविक बन पड़ा है जिसकी मिसाल अन्यत्र बड़ी मुश्किल से मिल पाती है।

अब आप स्वयं ही इस नाटक का वाचन करके आस्वाद लेने वाले हैं। पिछले चार दशकों से मलयालम रंगमंच पर अपने अनुभव के आधार पर आमुख के रूप में मैंने जो भी कहा है, असल में अपने को संयत करते हुए कहा है। प्रत्येक शैली और प्रवृत्ति को अलग-अलग लेकर उनके प्रयोग से इस नाटक में कहां-कहां और कैसा चमत्कार हुआ है इसका बयान करने की गुंजाइश आमुख के छोटे कलेवर में नहीं है। वैसे नाटकों के पारखी दर्शक/पाठक ऐसे स्थलों को स्वयं ढूंढ सकते हैं। इसलिए आमुख को और लंबा करना नहीं चाहता। इस नाटक में सादर आपका स्वागत है।

–पी. के. वेणुक्कुट्टन नायर

पात्र

भास्करन

कंबर

गायक

ढोलकिया

शंकू नायर

नेता

केशवन हाथी

पंचायत अफसर

डाक्टर

फोटोग्राफर

ज्योतिषी किट्टु पणिक्कर

पहला दृश्य

मंदिर के अहाते में वटवृक्ष के चारों ओर का चबूतरा और उसका परिसर ही रंगमंच है। इस चबूतरे पर किसी जमाने में बरगद का विशालकाय वृक्ष लहलहाता खड़ा रहा होगा। अब उसकी जगह खड़ा है रूखा-सूखा ठूंठ। चबूतरा भी साबुत नहीं है, जगह-जगह से टूट-टाट गया है। वट का यह चबूतरा मंच के बीच नहीं, बल्कि पश्च भाग में दाईं ओर (हां, दर्शकों के दाईं ओर) स्थित है। पृष्ठभूमि में पर्दे के समानांतर जा रही है मंदिर की दीवार, जिसकी ऊंचाई करीब आठ फुट की होगी। जीर्ण-शीर्ण अवस्था में खड़ी यह दीवार मंच के बीच में आकर टूट गई है। तिकोने आकार की यह दरार हाथी के मस्तक-पट—सी दिखाई दे रही है। दरार का ऊपरी भाग लगभग चार-पांच फुट चौड़ा है, नीचे की ओर आते-आते चौड़ाई दो-ढाई फुट की रह गई है। अब यह दरार गांव के लोगों के आने-जाने का आम रास्ता बन गया है। हाट-बाजार या देशी शराब की दुकान की ओर जाने वालों के लिए सुविधा हो गई है, रास्ता काटकर वे इधर से निकल जाते हैं। मंच से करीब तीन सौ फुट बाईं तरफ मंदिर है, दाएं चलें तो चौराहा मिलेगा, उसके आगे घाट, बगल में ताड़ी की दुकान वगैरह-वगैरह। यह सब दर्शकों के दृष्टि-पथ से दूर है, किंतु इन सभी स्थानों का शोर-गुल और कोलाहल समय-समय पर मंच पर सुनाई देता है।

नाटक शुरू होता है।

बरगद के चबूतरे पर बैठा भास्करन किसी 'कथा प्रसंगम'[1] की पंक्तियों

---

1. कथा प्रसंगम्—केरल में प्रचलित संगीतमय कथा-शैली जिसमें 'काथिकन' (कथावाचक) हाव-भाव और लहजे में उतार-चढ़ाव के साथ कथा सुनाता है। साथ में पार्श्व गायक और वादक भी होते हैं।

का रिहर्सल कर रहा है। अटकने पर जब-तब कापी खोलकर देख लेता है। बाईं तरफ दूर से कंबर की आवाज सुनाई दे रही है :

काजू लो, बाजा लो, चमड़े की चप्पलें लो, काजल लो, कंब रामायण लो, चुनाव घोषणा-पत्र लो, पंचांग लो, मालिश का तेल लो, नकली बाल लो, लाटरी टिकट लो, खडाऊं लो, कामसूत्र लो, भगवद्गीता लो, दंतमंजन लो, तीर्थयात्रा—टिकट लो...

तरह-तरह की वस्तुओं के नाम ले-लेकर ऊंची आवाज में चिल्लाता हुआ कंबर प्रवेश कर रहा है। पूरे शरीर पर झूल रहे हैं तरह-तरह के विज्ञापनों के बैनर और पोस्टर। भास्करन कंबर की ओर ध्यान नहीं देता, रिहर्सल में डूबा रहता है। कंबर भास्करन के पास आकर खड़ा होता है। फिर कथावाचकों के अंदाज से आवाज ऊंची करते हुए बोलता है :

कंबर : बंधुओ ! संसार के नश्वर सुख-भोगों में डूबकर अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ करना छोड़ दो। पुण्य भूमि भारतवर्ष के चारों धाम धर्म और अध्यात्म की ज्योति जगा रहे हैं। काशी, रामेश्वरम, पुरी-जगन्नाथ और द्वारका-धाम की यात्रा पर निकलो, जीवन धन्य कर लो। भव-बंधन कट जाएगा, मुक्ति-मार्ग प्रशस्त होगा। तीर्थ-यात्रा के बहुत कम टिकट बचे हैं। केवल दो सौ रुपए में सकल मनोरथ सिद्ध कर लो। उद्योग-व्यापार में, प्रेम-प्रणय में, चुनाव में सफल बनो।

भास्करन : (*सब्र खोकर*) धत् तेरे की ... कंबर के बच्चे ! अपना यह खटराग बंद करेगा कि नहीं ? अभी इसी वक्त रिहर्सल पर नहीं आया तो खुद मुझे तीरथ करने निकलना पड़ेगा। अकेले रिहर्सल करने बैठा हूं, बीच में आ गया तंग करने। तुम्हें पता नहीं, कथा का सीजन जल्दी शुरू होने वाला है ?

कंबर : (*जोर से हंसता है। फिर भास्करन को मनाने की कोशिश में*) मुझे पता है गुरु ! तभी तो भागा-भागा आ रहा हूं, रिहर्सल के लिए मंदिर जाकर गायक और ढोलकिये को भी बुला लाया हूं।

भास्करन : फिर वे सब हैं कहां ?

कंबर : बस अभी आ रहे हैं। हमें फौरन शुरू कर देना चाहिए।

(*पोस्टर और थैलियां उतारता है।*)

गुरु ! ...

भास्करन : ऊं ... *(स्क्रिप्ट के पन्ने पलट रहा है।)*

कंबर : अबकी बार कथा जोरदार होनी चाहिए। ऐसा मजमा बांधें कि चार सीजन के बाद भी बुकिंग चलती रहे। मंचन एकदम निराला हो। गाने ऐसे हों कि लोगों के कानों में गूंजते रहें। अपने ये मंदिर वाले कलाकर हैं न, मंजे हुए हैं। इधर बुकिंग मिलने पर वे मंदिर की ड्यूटी से चार महीने की छुट्टी लेंगे। अर्जी नहीं भी दी तो कौन पूछेगा ? जवाब तलब हुआ तो फौरन हड़ताल ... घेराव।

(मृदंग और हार्मोनियम के साथ गायक और ढोलकिये का प्रवेश। दोनों मंदिर के कलाकार हैं।)

भास्करन : आओ, आओ। आज हम लोग रिहर्सल पूरी करके ही यहां से हटेंगे।

गायक : हम तो, भैया, हमेशा ही तैयार रहते हैं। रोज ही पूजा के बाद तैयार। मगर यह कंबर मिले तब न?

भास्करन : *(कंबर से)* भई, आइंदा रिहर्सल में कभी नागा नहीं होना चाहिए।

कंबर : *(कलाकारों से)* हां, कहे देता हूं। आगे से रिहर्सल में नागा नहीं होना चाहिए, एक दिन के लिए भी नहीं। आई बात समझ में ?

गायक : कमाल है भई, चित भी तेरी पट भी तेरी। हमारी वजह से थोड़े ही रुकती है ? एक बात सुन लो, रिहर्सल में कसर रह गई तो गीत के बोल कहीं और जाएंगे, तान कहीं और।

कंबर : तो शुरू करें ?

भास्करन : हां, हां । करें शुरू ... लेकर प्रभु का नाम ।

(भास्करन बीच में, बाईं ओर कंबर और दाएं गायक और ढोलकिया—बरगद के चबूतरे पर कतार में खड़े होते हैं।)

कंबर : गुरु ... एक बात सुन लो। कार्यक्रम का उद्घोष है न, जोरदार होना चाहिए। इस पर मैंने कुछ सोच रखा है, बताता हूं अभी। पर्दा उठने से पहले एक भारी-भरकम गोंग[1] ...

(आगे बढ़कर गोंग ठोंकने का अभिनय)

1. गोंग - गोलाकार टिकली, जिस पर हथौड़ी मारकर घंटा-ध्वनि की जाती है (घड़ियाल)।

ठन्
कथा प्रसंगम।
मंदिर का हाथी !
ठनन... ठन्।
कथावाचक - भास्कर कुमार बी.ए. !
तरिकिट ... तरिकिट
कथा और गीत .... ओमचेरी !
ठन् ... ठनांग
पार्श्वगायन - गानभूषण कोच्चांपल्ली मदन !
पालक्काड पद्मनाभन!
ठनांग ... ठन् ।
(आवाज बुलंद करते हुए) कंबर ... रामकृष्णन !
ठन् ... ठनांग
मंदिर का हाथी !

(भास्करन से) कैसा आइडिया है, गुरु ?

भास्करन : एकदम चकाचक। पर, अबकी बार रहने दो।

कंबर : चलो, अगली बार से ही सही।

भास्करन : अच्छा ! कथा प्रस्तुति-गान से शुरू करेंगे।

कंबर : *(गायक और ढोलकिये से)* प्रस्तुति-गान दो हैं, याद रखना।

भास्करन : मंदिर के उत्सव और धर्म-सम्मेलनों के लिए गणेश-वंदना वाला।

गायक : गुणगण के धन ...

भास्करन : हां, वही !

गायक : खूब जमेगा। तरन्नुम पर खरा उतरने वाला गीत है।

ढोलकिया : अजी यही नहीं, कथा गज की, मंगलाचरण गजानन का और गीत भक्ति रस का।

कंबर : दूसरा प्रस्तुति-गान ... राजनीतिक जलसों, किसान सभाओं या साहित्यकारों की षष्ठि-पूर्ति समारोहों के लिए है—जाग उठो, जाग उठो ... हे ...।

गायक : वह भी फबेगा। उसका अपना अलग ही रंग है। उसमें इन्कलाब का

जोश है, क्रांति का बिगुल है, संघर्ष का शंखनाद है।

कंबर : वाह ! अलग-अलग किस्म के दर्शकों के लिए अलग-अलग किस्म के प्रस्तुति-गान। एकदम नया-नवेला ... क्या नाम है ? ... आइडिया ! आज तक किसी और मंडली को ऐसा आइडिया नहीं सूझा।

ढोलकिया : भक्तों के लिए भक्ति और इंकलाबियों के लिए जोश।

गायक : हां जी, आज के दिन कौन-सा चलेगा ? भक्ति का या क्रांति का ?

भास्करन : आज भक्ति-रस बहने दो। धुन इसकी क्लासिकल है। रिहर्सल में कोई कसर नहीं रहनी चाहिए। ... तो हो जाएं शुरू ?

(भास्करन शुरू करता है। तीनों समवेत स्वर में गाते हैं।)

गुण-गण के धन मंजु जटाधर
मुनिगण सेवित गिरिजा मनोहर;
एक दिवस गिरिजा मनोहरी
विहर रही थी करिणी बनकर
विहरे शंकर धर कर करि तन
झूम झूमकर विहर रहे थे,
नाना मृग गण परिवृत वन में
अगजा के संग करिवर शंकर;
सुरभित वन में मधु का निर्झर
पिक-कुल कूजन केकी-नर्तन
सरसिज दल में अलि कुल गुंजन
हुलसित मन था हर्षित तन था;
परिरंभण के मोहक क्षण में
जन्म हुआ था श्री गणेश का
कोटि सूर्य की द्युति से शोभित
सिद्धि सदन गजवदन विनायक !
वर दो, वर दो, नतमस्तक हैं !

ढोलकिया : ट्यून कैसी रही ?

भास्करन : क्या कहने ! एकदम लाजवाब !

ढोलकिया : विलंबित से मध्य लय में वह आरोहण और फिर विलंबित में आने की बानगी । वाह, कमाल हो गया है !

कंबर : बस, लोग इसे सुन लें, फिर देखना कमाल। सिनेमा वाले मास्टर जी के पीछे पड़ेंगे।

गायक : सिनेमा वाले ? क्लासिकल से उनका क्या सरोकार? वहां तो संगीत के नाम पर चिल्लाहट होती है गला फाड़कर, जैसे कहीं मार-धाड़ हो रही हो। साथ में चीखने के लिए बीसेक बाजे।

भास्करन : अच्छा, चलो, शुरू करें। *(कथा-वाचन शुरू होता है।)*

सहृदय महानुभावों से अलंकृत सभा को सादर अभिवादन। समकालीन समाज के विकृत और भयानक चेहरे का पर्दाफाश करता है आज की कथा का इतिवृत्त। हमारे पूर्वजों ने एक ऐसे स्वतंत्र राष्ट्र का, आदर्श समाज का सपना देखा था जिसमें छल-कपट का, प्रवंचना का नामोनिशान तक न हो; एक ऐसे समत्व-सुंदर समाज का जिसमें, कोई किसी का शोषण न करे, मानव-मानव के बीच में स्नेह-ममता का संबंध हो। हमारे पुरखों ने अकथनीय यातनाएं झेलकर अपने अश्रुजल से और खून-पसीने से इस स्वप्न को साकार किया। असंख्य त्याग और बलिदानों के फलस्वरूप देश स्वतंत्र हुआ और हमें स्वर्ग-समान यह स्वतंत्र राष्ट्र विरासत के रूप में मिला। किंतु असमानताएं और शोषण रंगमंच से सदा के लिए विदा नहीं हुए। भ्रष्टाचार दूर होने के बजाए नए-नए चोले पहनकर आए और समाज की जड़ों को खोखला करने लगे। आज पूतनाएं मोहिनियां बनकर घूम रही हैं। कीचकगण धर्मराजों की तरह सिंहासन पर विराज रहे हैं। मुखों की अपेक्षा मुखौटों की भरमार है। समाज के वृक्ष पर कुछ परजीवी मुफ्तखोरों का कब्जा हो गया है, ये लोग मुफ्त के माल पर मोटे-तगड़े हो रहे हैं। इनकी बनाई नीतियों और नियमों का शिकार होकर इस देश में लाखों-करोड़ों की संख्या में बेचारी गूंगी जनता मर-मरकर जी रही है। इन्हीं असहाय, बेसहारा और मृतप्राय जनता की भांति अपनी सारी जिंदगी दूसरों की मूर्तियां ढो-ढोकर, बोझा ढो-ढोकर, थके-हारे अधमरे हाथी की कथा आपके सामने पेश कर रहे हैं। इस अवसर पर आपके मन में यह सवाल उठ सकता है :

महाकवि कुमारन आशान ने कृति की विशेषता यह बताई है—'कृति वही कृति है अनुगान करे जो मानव-चरित्र का।' आप पूछेंगे, यदि यह सत्य है तो इस कथा में मानव की अवहेलना करते हुए हाथी का अनुगान करना विकृति नहीं है ?

(पार्श्व गायकों को संकेत करता हुआ)

कदापि नहीं है यह विकृति
दर्पण है यह, प्रतिबिंबित
जिसमें मानव की प्रकृति
दिख जाए कहीं
निज का चेहरा मेरे भाई,
क्षमा चाहते हैं
हम नहीं हैं इसके दोषी;
कपट-नाटक का सत्य जानकर
हंस पाओगे यदि तुम खुलकर
हंसी से उठेगी चिंतन की लहर;
आघात पाकर चिंतन का
ढहेंगे झूठे मुखौटे एक-एक कर।

हास्य के माध्यम से चिंतन करने की प्रेरणा देना हमारा उद्देश्य है। व्यक्ति भले ही कपट-वेशधारी हो, यदि वह स्वयं चिंतन करने लगेगा तो झूठे मुखौटे अपने आप झड़ जाएंगे। सुना नहीं ?

आइने के सामने
रू-ब-रू नहीं होता जब तलक
यही जिद रहती है बदसूरत की
कि कोई नहीं है हम-सा सुंदर।

बदसूरत व्यक्तियों को खुद एहसास होना चाहिए कि उनका चेहरा सुंदर नहीं है। आइए, दिखा दें आइना उनके चेहरे के सामने। या तो तैश में आकर लोग आइना ही उठाकर फेंक देंगे, या स्वयं को सुदर्शन समझने का उनका घमंड चूर-चूर हो जाएगा। इन दोनों में से कोई भी बात घटित हो, ठीक रहेगा। *(दो कदम आगे बढ़कर)*

मित्रो ! आप सभी के लिए सुपरिचित है कोच्चाम्पल्लि केशवन—मंदिर का हाथी। केशवन कहलाए जाने से पहले यह किसी बेनाम हाथी का बेनाम बच्चा था। हाथी का यह मासूम बच्चा सह्य पर्वतमाला के ढालों पर स्वच्छंदता से घूमता-फिरता, उछल-कूद करता था।

विचर रहा था गज का शावक
सह्य-गिरि के ढाल में
छल-कपट से निपट अज्ञात
गिर पड़ा हाय ! महा खड्ड में
ना, ना वह खड्ड नहीं था

प्रवंचना थी मानव की
कुटिल मानव की पटुता थी।

जिसे उसने लता-कुंज समझ रखा था, यथार्थ में वह झाड़-झंखाड़ से ढकी छलना थी। मौत के पंजे में फंसकर हाथी का बच्चा बिलखने लगा।

उसका वह अरण्य रोदन
ज्यों कर रही हो दीन रोदन
परतंत्र कातर मानव-चेतना
क्षितिज से टकराकर
उठा आर्तनाद
गुंजित हुआ दिक्-दिगंत में
ग्रह-पिंड में।

किंतु वह नन्हा हाथी नहीं जानता था कि इस दुनिया के कान इस तरह के न जाने कितने-कितने अरण्य-रोदनों के आदी हो गए हैं।

रोना नहीं मेरे वत्स ! एकाकी नहीं हो तुम
परतंत्रता के अपार सागर में
तिर रही हजारों किश्तियां
किनारा नहीं मिल रहा
खाकर बारंबार थपेड़े
डगमगाती ऊब-डूब करती हैं
हजारों किश्तियां परतंत्रता के सागर में।

दाएं-बाएं खड़े थे पालतू हाथी, आगे-पीछे चले वंचना के गड्ढे खोदने वाले मानव—इस तरह जंगल से नगर की ओर जुलूस में लाया गया वन का वह लाडला बेटा। यों शुरू हुई जंगलीपन से सभ्यता के जंगलीपन की ओर उसकी लंबी यात्रा। गुलामी उसका पहला चरण है। वन विभाग द्वारा नीलामी हुई, बोलियां होने लगीं। किसी धनाढ्य ने ऊंची बोली देकर हाथी का वह बच्चा खरीद लिया। कोच्चाम्पल्लि मंदिर के देवता की कृपा से—अनुग्रह आशीष से—उस जमींदार का भाग्य खुला था। इष्ट देव के प्रति कृतज्ञता जताने के लिए धनाढ्य ने हाथी के बच्चे को देवता के सामने भेंट के रूप में समर्पित किया। यों वह प्रतिष्ठित ठाकुर का गुलाम बन गया। ठाकुर के द्वार पर उसका नाम रखा गया 'केशवन'—जैसे कि जेलखाने में कैदियों को नंबर दिया जाता है।

अनिकेत निर्धाम को आज मिल गया धाम
नामातीत अनाम का हुआ आदि केशव नाम।

('अनिकेत निर्धाम को' वाली पंक्ति जब शुरू होती है, थोड़ी दूर से महावत शंकू नायर की आवाज सुनाई देती है। ज्यादा शराब पीने से आवाज लड़खड़ा रही है ... ऊंची आवाज में बोलता हुआ आ रहा है ...

धत् तेरे की ! बंद कर वकवाश ! क्या समझ रखा है शंकू नायर को ? बीस बीघा जमीन.... और ... सात एकड़ के बागान का मालिक था यह शंकू नायर ... शराब पी-पीकर साड़ा डूब गया तो तेड़ा क्या बिगर गया ... स्साली। सूरज और चांद भी शंकू नायर के शामने अड़ब से खड़े रहते ... चार कौड़ी की औरत, मार-मार के तेरा मत्था फोड़ दूंगा समझी ?

(शंकू नायर की आवाज सुनते ही सब गाना बंद करते हैं और बेसब्री से बड़बड़ाने लगते है।)

कंबर : अपन तो खिसके, गुरु ! नहीं तो मूंगफली उधार देनी पड़ेगी ।

ढोलकिया : धत् तेरे की ! आज भी रिहर्सल अधूरी रहेगी। देखो, कैसे आ रहा है ... नशे में धुत्त ... पैर डगमगा रहे हैं, जीभ लड़खड़ा रही है।

भास्करन : एक हंगामे के बाद चुपचाप निकल जाएगा। चाहे कुछ भी हो जाए, आज रिहर्सल जारी रहेगी।

गायक : तब तक हम लोग चाय पीकर आते हैं।

भास्करन : हां हां। यह लफड़ा निबट जाए। तुरंत बुला लूंगा। *(कंबर, गायक और ढोलकिया टूटी दीवार से निकल जाते हैं।)*

('सूरज और चांद भी शंकू नायर के सामने...' वाली पंक्ति बोलते-बोलते शंकू नायर का प्रवेश होता है। पिछवाड़े से चलते हुए मंच में प्रकट होता है शंकू नायर। करीब छप्पन साल की उम्र। कटी हुई छोटी मूंछ। बाजू की बनियान पहन रखी है जो फटने लगी है। अंगोछे को सिर पर पगड़ी की तरह बांध रखा है। लुंगी को तहकर कमर से घुटने तक पहना है। एक हाथ में छड़ी, दूसरे हाथ में अंकुश तथा रस्से का छोर। रस्से का दूसरा छोर दूर कहीं बांध रखा है। गोलाई में सिमटे रस्से को धीरे-धीरे सीधा करते हुए सावधानी से चलता है। कमर पर हंसिया लटक रहा है।)

भास्करन : *(शंकू नायर के पास जाकर)* किसने बोल दिया हमला ? *(अचानक आवाज सुनते ही शंकू नायर चौंकता है। उसकी एकांतता भंग होती है। सकपका कर देखता है और छड़ी जमीन पर टेक देता है।)*

शंकू नायर : कौन है बे ... *(दोनों एक दूसरे को घूरते हैं)* अबे, तू भास्करन है। और बता, मैं कौन हूं ?

(भास्करन चुप। उत्तर नहीं देता।)

शंकू नायर : (अकड़कर खड़ा होता है) *शुना नहीं, बोल ड़े, यह मैं कौन खरा हूं ?*

भास्करन : तुम ...? कुंचियम्मा घटे छड़ी जमा अंकुश जमा ...

शंकू नायर : चल ड़े जमा के बच्चे ... मैं हूं साच्छात कोच्चाम्पल्लि केशवन का महावत। केशवन का ... ?

भास्करन : प्रेयसी का पति।

शंकू नायर : प्ड़ेयसी ? ... तब प्ड़ेयसी ही सही। 'प्ड़ेयसी' कौन होती है जानता है ड़े ? *(धीमी आवाज में)* ड़खैल ... बिना शादी की जोड़ू। 'प्ड़ेयसी की चिड़ौड़ी में प्रीतम कामपाल जो गीत गाता है, शुना है तूने मेरे ड़ाजा ? नहीं ? तो शुन ले। *(गाता है)*

विवश विकल हूं कामिनी
पूर्ण कर मम कामना
ओ मेरी काम मोहिनी
पूर्ण कर ...

(याद करने की कोशिश करता है।) ... पूर्ण कर ... पूर्ण कर ... फिर क्या है ड़े भास्करन ! नगीने की तरह जड़ी एक गाली आती है यहां पर, वह कौन-सी है रे ? बोल बे मेरे छोटे शैतान ! क्यों बे तुझे गाना आता है ?

भास्करन : यह बढ़िया रहा ! मुझसे पूछ रहे हो, गाना आता है ?

शंकू नायर : तो गाओ न ! मैं भी शुनूंगा।

भास्करन : *(गाता है)*

(कथा का एक गीत)

देवन की देवियों की
कोटि-कोटि झांकियां

चलीं निकल नित्य ही
केशवन की पीठ पर
लट्ठ पर लट्ठ महा
जंगल भर के लट्ठ सब
चढ़ चुके हैं नित्य-नित्य
केशवन के पुट्ठ पर।
छड़ी है बेंत की बनी
तेज-तर्रार पैनी भी
चुभ रही है यत्र-तत्र
केशवन की देह पर।
गाली पे कठोर गाली
एक से एक चुनी हुई
घुस रही है शूल-सी
केशवन के कान पर।

शंकू नायर : मूर्ख कहीं का ! साले, ढंग की दो-चार गालियां आती नहीं और चल पड़ा है कथा सुनाने ! तू क्या सुनाएगा कथा-वथा ? अरे, पूरम-पर्व पर पेण्मणि[1] तिरुमेनी ने जो गीत गाया था, सुना है तूने ?

भास्करन : कौन ? कौन ?

शंकू नायर : पेण्मणि तिरुमेनी। अरे मूर्ख, पेण्मणि तिरुमेनी का गाना नहीं आता तो दूसरी चीजें पढ़कर क्या करेगा ? भाड़ में जाए तेरी बी.ए. की पढ़ाई। ... सुन ले...

उबटन मलकर असनान किया
निर्मल भयो शरीर।
भक्तिभाव से प्रणत हुआ मैं
जगदीश के चरण पर।
बिठा लिया हिय में ध्यान
नयन मूंदकर दो पल।
स्फुरित हुआ मन में सहसा
मदन का केलि-विलास।
तन्वंगी मंदहास-वदना वह
सुभग शीतल ...

---

1. सही नाम है वेण्मणि नंबूदरी। मलयालम में शृंगार रस के कवि। शंकू नशे में 'वेण्मणि' को 'पेण्मणि' कहता है। पेण्मणि, अर्थात स्त्री। नंबूदरी के लिए आदरार्थक शब्द है, तिरुमेनी।

शीतल...? इसके बाद क्या है रे ?

भास्करन : शीतल ... ठंडा ... आइस ... क्रीम !

शंकू नायर : धत् तेरे की ! तिरुमेनी ने चुनी हुई एक गाली यहां फिट की है, जैसे अंगूठी में नगीना ...

भास्करन : सुदामा कांड !

शंकू नायर : नहीं, नरकासुर वध ! अच्छा, अच्छा, न सही नरकासुर ... सुदामा कांड ही समझ लो। अच्छा बोलो, सुदामा के कितने बच्चे थे ?

भास्करन : सुदामा के ... ?

शंकू नायर : मैं पूछ रहा हूं ... कितने बच्चे थे ?

भास्करन : सुदामा और बच्चे ! खरगोश के सींग !

(हंसता है।)

शंकू नायर : तू क्या समझता है, सुदामा फक्कड़ और फाके-मस्त था, इसलिए उसके बच्चे नहीं हुए ? अबे, उसके एक नहीं, कई बच्चे थे। सुदामा की घरवाली ने ठीक ही कहा था :

आकाश में जब छाई लाली
कलप उठे हमारे लाल।

लाल ... माने बच्चे ! हां बोल, 'लाल' से क्या समझे ?

भास्करन : लाल ... ?

शंकू नायर : तेरा सिर ! हां बोल, 'लाल' से क्या समझे ?

भास्करन : बच्चे ...

शंकू नायर : अब समझा, मेरा लाल ! क्यों, सुदामा की घरवाली ने कहा था न ! 'आकाश में जब छाई लाली, कलप उठे हमारे लाल ! प्राणनाथ, जाकर कृष्ण जी से उधार मांग लाओ। नहीं तो मैं खुद चली जाऊंगी कन्हैया के पास।' सुदामा बेचारा घबरा गया।

भास्करन : शंकू चाचू !

शंकू नायर : क्या ?

भास्करन : सुदामा की पत्नी ने ऐसा नहीं कहा होगा।

शंकू नायर : कहा था।

भास्करन : मैं कहता हूं, ऐसा कुछ नहीं कहा था।

शंकू नायर : मैं कहता हूं, कहा था।

भास्करन : कह रहा हूं न ? नहीं।

शंकू नायर : कैसे नहीं कहा था, उल्लू के पट्ठे ! मेरी औरत ने भी कल यही श्लोक गाया था।

भास्करन : यानी कुंची चाची ने।

शंकू नायर : हां उसी चुड़ैल ने।

भास्करन : तब तो मान गया, सुदामा की घरवाली ने जरूर कहा होगा। और यह भी सच ही होगा कि सुदामा के बच्चे थे।

शंकू नायर : अब माने, उल्लू के भतीजे !

भास्करन : हां, चाचा !

शंकू नायर : तब तो, तुम भी उस चुड़ैल की दुम कुंची से डरते हो ?

भास्करन : डर नहीं चाचा, स्नेह। कुंची चाची से स्नेह, केशवन से स्नेह, उदुप्पान के लंगड़े बैल से स्नेह।

शंकू नायर : स्नेह ... !

भास्करन : हां, ऐसे ही जैसे शंकू चाचा को कुंची चाची से डर, केशवन से डर, मथाई ठेकेवाले से डर।

शंकू नायर : चुप कर बे, हरामजादे ! शंकू नायर को किसका डर है ? अबे डर है तो इन सबको शंकू नायर से। सब साले मेरा हुक्म मानने से इंकार कर रहे हैं। एक-एक को सबक सिखा दूंगा !

भास्करन : वे सब कानून और व्यवस्था को तोड़ने वाले हैं ... शंकू चाची ने बच्चे जनने से, केशवन ने लट्ठे ढोने से, और मथाई ठेके वाले ने उधार शराब देने से इनकार करके सदियों से चले आ रहे कायदे-कानून तोड़े हैं। इन्हें इसकी सजा तो मिलनी चाहिए।

शंकू नायर : साला, लट्ठे नहीं ढोता ! नवाबजादे का दिमाग आसमान पर जा चढ़ा है। नहीं आता न घाट पर लट्ठे ढोने, न सही, यहीं से खींचेगा लट्ठ। यह सारा इंतजाम इसी के लिए है। *(रस्से वगैरह दिखाता है। रस्सा*

खींचता-खींचता मंच के बीच तक जाता है। रस्सा तनकर खत्म हो जाता है।)

धत् साले की ! यह रस्सा भी कम पड़ गया। *(और खींचता है, पर खिंचता नहीं।)*

भास्करन : इस रस्से का दूसरा छोर कहां है ?

शंकू नायर : दूसरा सिरा ... ? घाट पर लट्ठों से बंधा है। कालू के लट्ठों से।

भास्करन : केशवन की सूंड तक पहुंचने के लिए कम-से-कम सौ फुट रस्सा और चाहिए होगा।

शंकू नायर : वाह ... कहां से आएगा ... सौ फुट रस्सा ?

भास्करन : हां, सो तो है। कहां से आएगा ... हां, शंकू चाचा साढ़े पांच फुट, अंकुश तीन फुट, डंडा चार फुट... कुल साढ़े बारह फुट ठीक है न ?

शंकू नायर : हां, ठीक है।

भास्करन : यह सब बांधने पर भी साढ़े बारह फुट ही हुआ। पर यह भी कम रहेगा।

शंकू नायर : अबे, तू यह सिरा पकड़ गधे की दुम ... होशियारी से पकड़े रहना, कहीं छूटने न पाए।

भास्करन : *(रस्सा पकड़ते हुए)* कहीं से और रस्सा लाकर जोड़ोगे ?

शंकू नायर : ना बेटा, तेरी गर्दन पर बांधेंगे। बड़े आए एम.ए. पास, अक्ल के नाम पर सिर में भूसा। अबे केशवन को सौ फुट आगे लाने से काम नहीं बन जाएगा क्या ?

भास्करन : काम ... ? वही लट्ठे ढोने का ?

शंकू नायर : लट्ठे नहीं ढोएगा तो और क्या करेगा ? इस मूर्ति-भंजक को कौन बुलाएगा भगवान की मूर्ति ढोने के लिए ?

भास्करन : देवन की देवियों की
कोटि कोटि झांकियां !
चलीं निकल नित्य ही
केशवन की पीठ पर !
लट्ठ पर लट्ठ महा ...।

शंकू नायर : अबे, गवैये की दुम ! गाना ही है तो यह भी जोड़ ले–

देवन की देवियों की

कोटि-कोटि मूर्तियां
पटककर चूर करना
केशवन को भाता है !

जब से यह मूर्तिभंजक के नाम से मशहूर हो गया, किसी ने इस पाजी को उत्सव पर बुलवाया है ?

भास्करन : नहीं बुलवाया तो यह उनकी गलती है।

शंकू नायर : गलती क्या है ? क्यों बुलवाएं इस सिरफिरे घमंडी को ? एक जमाना था, लोग दूर-दूर से आते थे, त्रिशूर 'पूरम' के मेले में आते थे सिर्फ केशवन को देखने के लिए। तुम्हें क्या पता ? तुमने कभी त्रिशूर का मेला देखा है ?

भास्करन : नहीं तो।

शंकू नायर : आल इंडिया के हाथी आते थे वहां, आल इंडिया क्या, दुनिया के कोने-कोने से आते थे। काशी से, रामेश्वरम से, जापान से, ऋषिकेश से, अमेरिका से, हरद्वार से, नैनीताल से लेकर भोपाल के ताल तक, चर्च गेट से लेकर इंडिया गेट तक ... कौन-सी जगह थी जहां से हाथी नहीं आते थे ! सब आते थे बड़ी शान से, पर जहां केशवन को देखा, सब की गर्दनें शर्म से झुक गईं। ऐसा लगता था, किसी सम्राट के सामने सामंत खड़े हों । मस्तक पर पट पहनाए सौ हाथी दाएं, सौ हाथी बाएं और बीच में केशवन ... अहा हा ... सर उठाए शान से खड़ा है ... सर पर सिंहासन ... सिंहासन पर भगवान, भगवान के ऊपर छत्र, पंख, चंवर ... क्या पूछते हो, क्या निराली शान थी ! *(तैश में आकर)* हुं ... सब कुछ डुबो दिया, बेड़ा गर्क कर दिया इस खूनी जल्लाद ने। *(दम लगाकर रस्सा खींचता है।)*

भास्करन : *(खींचकर गाता है)*

घाटे ही घाटे में है कमेटी देवालय की
बंद हुई आमदनी मंदिर के देवता की।
बिचारा महावत तो बन गया है सर्वहारा
पा लिया क्या केशवन ने घाटा करके इतना सारा ?
हर हर शिव शिव शंभो - बोलो,
केशवन को क्या मिला है घाटा करके इतना सारा ?

शंकू नायर : *(रस्सा नीचे डालता है, फिर गुस्से में)*

हां, केशवन को सब कुछ मिला है। कमेटी वालों के हिसाब-किताब के मुताबिक बहुत सारा खाना मिला है, इसे। चैन की वंशी बज रही है, बदन दुखाकर मेहनत नहीं करनी है। बोलो, मुझे क्या सिर्फ पगार का घाटा हुआ है ? मैं तो लुट गया रे ! *(लंबी सांस भरता है)* ... मेरे भी क्या कम ठाठ थे ! जहां कहीं से भी गुजरता, सुंदरियां एक-दूसरे को कोहनी मार-मारकर कहतीं *(स्त्री-सहज लज्जा का अभिनय)* 'वह जा रहा है केशवन का महावत !' और पलटकर ज्यों ही मैं अपनी नजर इधर-उधर फेंकता, शर्म से लाल हो जाती थीं। ऐसे शरमाने वाली सुंदरियों के बारे में महाकवि नंबूदरी ने क्या खूब कहा था। कहा था ... क्या कहा था ...।

भास्करन : शुक्र है, कुंची चाची ने तुम्हारी रासलीलाएं नहीं देखीं।

शंकू नायर : *(धीमी आवाज से)* कुंची सब जानती है, तभी तो जब कभी मैं मेले से लौटता, दो-चार दिन घर में घमासान युद्ध होता। पर क्या करता *(आहिस्ता से)* उन दिनों तो हर मेले में एक-एक ... ही ही ही।

भास्करन : वाह चाचा, हर मेले में एक-एक ... क्या ?

शंकू नायर : तेरा सिर ! *(रहस्य खोलता है)* एक-एक रखैल थी अपनी।

भास्करन : *(हंसता है)* तो इसका मतलब है, अब वे सभी विरह में तड़पती होंगी, बेचारी।

शंकू नायर : सब सत्यानाश ... इस घमंडी ने सब बरबाद कर दिया। इसने पहले पहल वेट्टिक्काड मंदिर की मूर्ति नीचे गिरा दी तो मैंने सोचा, बेचारे से चूक हो गई। लेकिन उसके बाद जब भी मस्तक पर झांकी चढ़ती तो वही शरारत ! मस्तक झटकाकर मूर्ति गिराना इसका विनोद-सा बन गया। देवता का विग्रह एक तरफ गिरता, बेचारा पुजारी दूसरी तरफ। तभी तो इस घमंडी का नाम पड़ा—'मूर्तिभंजक केशवन।' मंदिर कमेटियों ने इसे बुलाना ही छोड़ दिया। अब तो सभी मंदिरों के दरवाजे इसके लिए बंद।

भास्करन : मूर्तियां ढो-ढोकर बेचारे का मन भर गया होगा। सच पूछो तो केशवन भी घाटे में है। देवताओं की सेवा के बदले में मोक्ष की उम्मीद थी, उस पर भी पानी फिर गया। मंदिर को जुलूस की फीस का घाटा। शंकू चाचा को कामिनियों का घाटा।

शंकू नायर : मेरे घाटे का कोई हिसाब नहीं। अच्छे-भले दिनों में भी ठीक से वेतन

नहीं मिलता था। केशवन की सेवा के लिए मंदिर को मिलते थे दो सौ रुपए। और मुझे मिलता था—हर रोज दो रुपए।

भास्करन : और केशवन को ?

शंकू नायर : केशवन को क्या ? हिसाब की बही में इसे भरपेट खाना मिल गया। असल में रास्ते में कहीं नारियल का पत्ता अटक जाता या कोई टहनी मिल जाती तो गनीमत समझो। अब तुम ही बताओ, दो रुपए में भला मैं क्या कर लेता ? कोई शरीफ इंसान दो रुपए में गला भी तर नहीं कर सकता।

भास्करन : इन सबके बावजूद केशवन की शराफत देखो, मूर्ति ही तो गिराई थी ! उसने मंदिर के लोगों को तंग नहीं किया।

शंकू नायर : देख ली शराफत हरामी की। मैं चाहता हूं, इस दुष्ट को जान से मार डालना चाहिए। पाजी अपने साथ मुझे भी ले डूबा। इसका काम बंद होते ही उन चोरों ने मेरी पगार भी बंद कर दी। मूर्तिभंजक को मंदिर में घुसने देगा कोई ? मालिक ने कहा, इस दुष्ट से लट्ठे उठवाओ। सोचा, यही सही। पर कहां ... लट्ठे उठाए तो घमंडी की शान में बट्टा आ जाए। एक बार उठाया, जरा-सा चढ़ा, फिर छोड़ दिया। हर बार यही शरारत करता। आखिर तंग आकर इसे बांध डाला जंजीर से। तब से ऐसे ही खड़ा है पाजी।

भास्करन : ओह, कैसा दृढ़ निश्चय है ! कितने वर्ष हो गए, उसी स्थिति में खड़ा है। इसी का नाम है अहिंसात्मक लड़ाई, सत्याग्रह-संग्राम ! पर कद्र करने वाला कौन है ?

शंकू नायर : मैं हूं ना, मैं सब जानता हूं। मैं सिखाऊंगा इसे सबक। छोडूंगा नहीं। मरने तक लट्ठे खिंचवाऊंगा।

भास्करन : केशवन कैसे मरेगा ? लट्ठे ढोना अपने आप में एक बढ़िया व्यायाम है। फिर आराम करने को भी मिलता है। अब किसी भूतपूर्व सरकारी नौकर की तरह पेंशन के मजे लूट रहा है। भला, इतनी मेहनत का काम कैसे कर सकता है ?

शंकू नायर : क्यों नहीं करेगा ? (*हवा में छड़ी भांजता है। केशवन बिना हिले-डुले चुपचाप खड़ा है*)।

कंबर : लगता है, आज का खाना पूरी तरह से हजम नहीं हुआ । खाना था

भी तो कितना जोरदार ? दो अदद चितरी केले, दस दाने मूंगफली ! सेहत बनाने के लिए किसी को और क्या चाहिए ? शाबाश, जोर लगाके खींच !

शंकू नायर : खींचता है हरामी का बच्चा या आंख फोड़ दूं ? *(अंकुश मारने के लिए निशाना साधता हुआ पीछे की ओर सरकता है।)*

भास्करन : तो खींच दे भैया, खींच दे ! शंकू चाचा ने कल्लू भाई की ताड़ी चढ़ा रखी है, उधार में, खींच रे खींच ! *(जोर लगाके हैया हो ... पैर जमा के हैया हो ... हाथी भी कोशिश करता है)*।

(शंकूनायर खुश है कि केशवन उसकी आज्ञा का पालन कर रहा है। दबदबा बनाए रखने के लिए वह छड़ी दिखाते हुए 'खींच रे खींच' कहता रहता है। सब लोग रस्सा खींचते हैं और 'खींच रे खींच' चिल्लाते हुए केशवन का जोश बढ़ाते है। केशवन जो दम भरकर जोर से रस्सा खींच रहा था, एकाएक उसे छोड़ देता है। रस्सा तपाक से छूटकर लट्ठ वाले छोर की तरह खिसक जाता है। खींचने वाले लोग मुंह के बल गिर जाते हैं। थोड़ी दूर पर लट्ट के लुढ़कने की आवाज। शंकू नायर सकपकाकर उस तरफ ताकता रहता है, जहां रस्सा छूटकर निकल गया है।)

शंकू नायर : हो गया बंटाढार ! दगाबाज ... घाट पर रखा लट्ठा फिर लुढ़क गया पानी में।

भास्करन : कल्लू भाई को जब यह पता चलेगा तो वह खुद भी कूद पड़ेगा पानी में।

शंकू नायर : *(हाथी को देखते हुए)* हरामी, आज मैं तुझे नहीं छोडूंगा। आज तो तेरी जान निकाल के रहूंगा। ठहर तो। *(हंसिया हाथ में लेता है। हाथी अपना मस्तक झटकाते हुए सूंड़ आगे बढ़ाता है)* मुझे मार रहा है पाजी, भास्कर रे, साध ले इसे ... *(चिल्लाते हुए शंकू नायर भागता है)*।

भास्करन : कानून और व्यवस्था के रखवाले ऐसे मौकों पर भाग निकले तो बेचारी जनता का क्या होगा ? *(केशवन के पास जाकर उसका दांत सहलाता है।)* तुम्हारा गुस्सा दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा है, है न ? *(समर्थन की मुद्रा में हाथी मस्तक ऊपर-नीचे करता है।)*

कंबर : यह कैसा तमाशा है, गुरु ! भूख, ज्यों-ज्यां बढ़ती है गुस्सा भी उतना ही बढ़ता है। अच्छा, मैं जाकर रिहर्सल के लिए उन दोनों को बुलाता हूं।

(कंबर विज्ञापन के पर्दे कंधों पर लटकाते हुए चलता है। उसी समय कंधे पर मैगाफोन लटकाए कोई व्यक्ति रंगमंच पर प्रवेश करता है। देखने में नेता जैसा लग रहा है। कंबर और नेता एक-दूसरे को थोड़ी देर तक घूरते हैं। नेता अपना गुस्सा पीते हुए भास्करन के पास जाता है।)

नेता : नमस्कार।

भास्करन : आइए-आइए, नमस्कार ... बहुत दिनों के बाद इधर आना हुआ। सुना है, अपना मकान बनवा रहे हैं ?

कंबर : *(मुड़कर)* कोठी कहो भाई, गरीबों को लूटकर कोठी बनवा रहा है, काली कमाई की काली कोठी।

नेता : *(कंबर की तरफ गुस्से से देखता है। फिर भास्करन से)* जनसेवा से फुरसत ही नहीं मिलती, भाई ! ... तो तुम्हें अभी तक नौकरी नहीं मिली ? *(केशवन की तरफ देखकर)* बेचारा केशवन, कितने अफसोस की बात है। *(भास्करन से)* घबराओ मत मेरे भाई ! तुम्हारा पूरा ध्यान है मुझे। बस, थोड़ा इंतजार और करो।

कंबर : हां, हां, किए जाओ इंतजार, जब तक सांस में सांस है। उसके बाद पूरे बदन पर सफेद कपड़ा ओढ़ाने का काम इनका ! क्यों साहब, आपने मुझसे भी वादा किया था, पंचायत से एक दुकान दिलाने का। उसके लिए आप मुझसे पैसा भी ले चुके हैं। कई महीने गुजर गए।

नेता : तो मैंने कब इनकार किया कि दुकान नहीं दिलवाऊंगा ?

कंबर : इनकार नहीं करते इसलिए कि कहीं पीठ की मरम्मत न हो जाए।

नेता : मुंह संभालकर बात करो। तुम मेरी इज्जत पर ...

कंबर : ओह ... हो ! अरे, साहब की इज्जत अभी भी बाकी है।

नेता : कहे देता हूं, ठीक से बात करो। वरना अच्छा नहीं होगा। मेरा वक्त भी दूर नहीं, एक-एक को ऐसा सबक सिखाऊंगा कि याद रखोगे।

कंबर : बड़ा आया सबक सिखाने वाला ! कंबर अपने खून-पसीने की कमाई पर जीता है, तुम्हारी तरह काली कमाई पर कोठी नहीं खड़ी करता।

नेता : *(विषय बदलने की कोशिश में)* तो केशवन ऐसे ही खड़ा रहता है ?

इस बिचारे का जब ख्याल आता है, दिल में कसक होती है, बराबर इसका ध्यान आता रहता है। *(केशवन को देखते हुए)* विशाल हस्तिशाला की शोभा बढ़ाते हुए शान से खड़ा था यह गजकेसरी ! आज यह गोशाला में सिमटकर रहने को मजबूर है। केशवन को इस हाल में पहुंचाने की जिम्मेदारी आज की दोषपूर्ण व्यवस्था पर है। *(भास्करन की ओर देखते हुए)* तुम जैसे हजारों पढ़े-लिखे युवकों की बेरोजगारी दूर करने के लिए समाज के ढांचे को बदलना होगा, आज की दोषपूर्ण व्यवस्था को हटाना होगा।

कंबर : साथ ही जनता के कुछ दुश्मनों को भी हटाना होगा। गुरु, मैं चल रहा हूं। कुछ देर और रुका रहा तो मालिश के तेल का नुकसान होगा। *(दो कदम चलता है, फिर मुड़कर भास्करन से)* हां गुरु, जरा होशियारी से ... बातों-बातों में कहीं यह हाथी पर भी हाथ साफ न कर जाए। बेहया कहीं का ! *(चला जाता है।)*

नेता : *(कंबर के चले जाने से खुश है, कंबर पर कटाक्ष करते हुए भास्करन से)* न कुछ समझ-बूझ, न पढ़ाई-लिखाई ! हां, क्या कह रहा था मैं ? *(याद करते हुए)* व्यवस्था बदलनी चाहिए।

भास्करन : बदलिए साहब ! शौक से बदलिए, मगर एक शर्त पर। मुझे और केशवन को कोई काम-धंधा जरूर मिले। क्योंकि अगर केशवन को काम मिलेगा तो शंकू चाचा को काम मिलेगा। शंकू चाचा को काम मिले तो कुंची चाची काम में लगेगी। यों न जाने कितने लोगों को काम मिलेगा। लेकिन एक बात है, पहले केशवन का काम बन जाना चाहिए, मेरी नौकरी का नंबर बाद में भी आए तो कोई हर्ज नहीं।

नेता : शाबाश ... कितने सुंदर विचार हैं ! नौजवान ! ... तुम जैसे लोगों को तो फील्ड में आकर काम करना चाहिए। अच्छा, बताओ, यहां पड़े-पड़े क्या करते हो ?

भास्करन : हवाई किले बनाता हूं। ख्याली पुलाव पकाता हूं। यूं देखा जाए तो एक तरह से फील्ड में ही हूं। यानी सड़क पर। जिंदगी सड़क पर ही गुजर रही है। वैसे आजकल जनता के लिए एक कथा की तैयारी कर रहा हूं ... जिसमें केशवन की जीवनगाथा है। देख नहीं रहे हैं संवाद में तुकबंदी ?

नेता : भाई मेरे ! मजाक छोड़ो। पता है, इस समय ये मसले बड़े गहरे हैं। इस वक्त सबसे बड़ा सवाल यह है कि सदियों से चली आ रही सामंती

व्यवस्था को—यानी हाथियों को मंदिर में गुलाम बनाए रखने की सामंती व्यवस्था को—बदलने के लिए सरकार ने क्या कदम उठाया है ?

भास्करन : वाह ! वाह ! ! लेकिन तुकबंदी में कसर रह गई है। अगर सरकार इसे खत्म करने में आनाकानी करेगी तो सरकार की नाक में दम करने के लिए ...

नेता : यों हर बात में मजाक मत करो। जरा ध्यान दो और सारे मसले पर गौर करो। केशवन आज अपने रक्त की आखिरी बूंद से जो लड़ाई लड़ रहा है ...

भास्करन : नहीं, आज केशवन रक्त-रहित लड़ाई लड़ रहा है। क्योंकि इस बेचारे में खून नामक कोई चीज है ही नहीं।

नेता : देखो मेरे युवा मित्र, राष्ट्र के मसले यूं ही मजाक में नहीं उड़ाए जाते। सोचो, इस देश में केशवन जैसे कितने लोगों ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी देवी-देवताओं की मूर्तियां ढो-ढोकर जीवन बरबाद कर दिया है।

(दूर से शंकू नायर की आवाज)

शंकू : क्या मैं उधर आ सकता हूं ? भास्कर ! वह मुंहफट मक्कार क्या बक रहा है ?

भास्करन : लेक्चर झाड़ रहा है।

शंकू : ऐं ? क्या कहा ?

भास्करन : मैंने कहा, भाषण दे रहा है।

शंकू : मार डालूंगा साले को, आज मैं खत्म करके ही छोडूंगा।

नेता : *(घबराकर)* को ... कौन ... कौन है ?

भास्करन : *(उसी ओर देखते हुए)* शंकू नायर। केशवन का महावत।

नेता : तो ... क्या कह रहा था ? किसको मारने की धमकी दे रहा है ?

भास्करन : केशवन को। आजकल दोनों में जरा खटपट है।

नेता : ओह, यह बात है ! मैंने सोचा ... *(थोड़ी दूर जाकर झांकता है)*। काफी लोग खड़े हैं वहां।

भास्करन : हां, खूब हैं। चाय की दुकान पर, शराब के ठेके पर, चौराहे पर आदरणीय जनता है। *(नेता यों चारों तरफ नजर दौड़ाता है, मानो उसे किसी का*

इंतजार हो)। क्यों आप किसे देख रहे हैं ?

नेता : एक फोटोग्राफर को कहा था आने के लिए। केशवन के साथ अपना फोटो खिंचवाने के लिए। चुनाव आ रहा है न ? लेकिन आजकल जनता पर पूरा विश्वास नहीं किया जा सकता। न जाने ऊंट किस करवट बदले ! फिर भी जो मौका मिला है, उसे नष्ट करना भी उचित नहीं है। *(मैगाफोन उठाकर नकली आवाज में)* भाइयो, बहनो ! अब आपके सामने बोलने के लिए यहां पधारे हैं स्वतंत्रता-सेनानी, क्रांति-वीर श्री काट्टालम कुट्टी, जिनका जीवन, त्याग और बलिदान का ज्वलंत उदाहरण रहा है। आप जानते ही हैं, आगामी चुनाव में श्री काट्टालम कुट्टी आपके उम्मीदवार हैं। आदरणीय कुट्टी से अनुरोध है कि वे आपके सामने चंद शब्द बोलें ...श्री कुट्टी !

भास्करन : अभी यह घोषणा करने वाला कौन था ? कुट्टी नहीं थे ?

नेता : *(भास्करन को चुप रहने का इशारा करता है, फिर अपनी असली आवाज में)* सज्जनो, देवियो ! केशवन की लंबी बीमारी से हम सब सामान्य रूप से चिंतित ...

भास्करन : सामान्य रूप से नहीं, समान रूप से ।

नेता : *(भाषण जारी)* हम सभी समान रूप से चिंतित हैं। समाचार पत्रों में केशवन की बीमारी की खबर पढ़कर मुझे भारी धक्का लगा। लगातार पचास वर्षों की कड़ी मेहनत ने केशवन को इस नाजुक हालत में पहुंचा दिया है। इस कर्मयोगी गजवीर की सोचनीय स्थिति पर जिसके दिल में हमदर्दी नहीं उठती, मैं उसे हृदयहीन कहूंगा। आइए, विचार करें, केशवन किस बीमारी से पीड़ित है ...

शंकू : *(दूर से)* दाद और खुजली से। कौन है वे उधर, केशवन की वकालत करने वाला ?

नेता : *(विनय से)* आपका प्रिय उम्मीदवार है, यह अदना-सा जन-सेवक।

(आवाज बुलंद करते हुए) अब हमें इस बीमारी के बुनियादी कारणों पर चिंतन करना होगा। इस धर्म-निरोध जनतंत्र राष्ट्र में...

भास्करन : धर्म-निरोध नहीं, धर्म-निरपेक्ष। निर् जमा अपेक्ष। निरपेक्ष।

नेता : हां वही, धर्म-निरोध राष्ट्र में हाथियों को मंदिर की निजी संपत्ति के रूप में रहने देना भारी भूल है। यह सरासर अन्याय है। दूसरे धर्मों के मानने वाले हमारे भाइयों के प्रति घोर अपराध है, सौतेला व्यवहार है। मैं पूछता

हूं, क्या गिरजाघरों में हाथी पाले जाते हैं ? मस्जिदों में हाथी पाले जाते हैं ? नहीं । इस सांप्रदायिक...

भास्करन : *(गुस्से से)* क्या बके जा रहे हो ? धर्म के नाम पर भाई-भाई को आपस में लड़वाकर वोट बटोरने का इरादा है तो सुन लो, यहां नहीं गलेगी तुम्हारी दाल !

नेता : *(माफी मांगने की मुद्रा में भास्करन के सामने हाथ जोड़ता है। फिर अपना भाषण जारी रखता है।)* एक बहुत बड़ा सवाल हमारे सामने खड़ा है। वह सवाल यह है कि कब तक हम सदियों पुराने घिसे-पिटे तरीकों को अपनाए रखेंगे। सदियों पुराना रिवाज है, हाथी सदा मंदिर में पलें और मंदिर में बड़े हों। मंदिर के छोटे-बड़े देवताओं की मूर्तियां पीठ पर उठाए रोज मंदिर की परिक्रमा करते रहें और मंदिर की चार दीवारी के अंदर घुट-घुटकर अपनी जान दे दें।

भास्करन : तुंचन[1] कुंचन[2] जैसे कितने वरिष्ठ कवि हैं !

नेता : आप ही बताइए, हाथियों को बेकार के काम क्यों दिए जाएं ? देवी देवताओं की मूर्तियां उठवाकर मंदिर-मेले में क्यों घुमाया जाए ? भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा है कि हम राष्ट्र की उन्नति के काम करें, जनता के काम करें। हाथी लट्ठे ढो सकते हैं, चट्टानें तोड़ सकते हैं, सरकस में जनता का मन बहलाव कर सकते हैं। मैं पूछना चाहता हूं, पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान सरकार ने हाथियों के कल्याण के लिए क्या किया है ? महावतों के लिए क्या किया है ?

शंकू : बोले जा प्यारे, बोले जा। अरे, इस देश में कम-से-कम एक तो निकला माई का लाल !

नेता : *(जोश के साथ)* जब तक हाथियों की हालत में सुधार नहीं होता, क्या सरकार देश में सोशलिज्म ला सकती है ? सोशलिज्म लाने के लिए सबसे पहले हाथियों को पूंजीपतियों के हाथ से निकालकर सार्वजनिक क्षेत्र में लाना होगा। कार्ल मार्क्स ने भी इसी बात पर जोर डाला है। इसलिए मैं अभी यह मांग पेश करता हूं कि बेचारे हाथियों को लालची पूंजीपतियों के चंगुल से मुक्त किया जाए। एक भी हाथी निजी क्षेत्र में न रहने पाए। तमाम हाथियों का राष्ट्रीयकरण किया जाए।

---

1. तुंचन : मलयालम के रामकथाकार तुंचत्तु रामानुजन एषुत्तच्छन।
2. कुंचन : कुंचन नंबियार, मलयालम के हास्य कवि और नृत्य-विधा ओट्टन तुल्लल के प्रवर्तक।

(दूर से आवाज)

'इन्कलाब ! जिंदाबाद !
हाथियों का राष्ट्रीयकरण हो !
हाथियों का राष्ट्रीयकरण हो !

आप सब लोगों का जोश देखकर मैंने फैसला किया है कि मैं इस सवाल को लेकर एक मोर्चा कायम करूं और सत्याग्रह शुरू करूं। प्रतिक्रियावादी ताकतों का सामना करने के लिए जरूरत पड़ने पर आमरण अनशन तक ... यानी नित्याहार सत्याग्रह तक ...

भास्करन : नित्याहार सत्याग्रह नहीं, निराहार सत्याग्रह।

नेता : हां, नित्याहार करूंगा। मैं ऐलान करता हूं कि आमरण अनशन के लिए भी तैयार हूं।

शंकू : और महावतों के अनशन का क्या होगा, पाजी ! हाथियों का राष्ट्रीयकरण हो गया तो महावतों का क्या होगा ?

नेता : महावतों को तमाम सहूलियतें मिलनी चाहिए, जैसे नौकरी की स्थिरता, बोनस, पेंशन सभी सुविधाएं। आज अगर तमाम असंगठित महावत एक झंडे के तले इकट्ठे हों जाएं और एक स्वर में गरजें तो जीत हमारी होगी।

भास्करन : अंतर्राष्ट्रीय महावत यूनियन जिंदाबाद ! दुनिया के महावतो एक हो।

(दूर से आवाज : 'विद्यालय भवन के लिए जो चंदा जमा किया था, उसका हिसाब दो')।

नेता : *(गला साफ करके बोलने लगता है।)* हां, तो मैं यह कह रहा था ...

(कई आवाजें : हिसाब दो, हिसाब दो। चंदाचोर, मुर्दाबाद ! चंदाचोर, मुर्दाबाद ! !)

(बिना हूटिंग की परवाह किए) हाथियों के राष्ट्रीयकरण के बाद जब महावतों की दशा सुधारने के लिए *(आवाजें : हिसाब दो, हिसाब दो। चंदाचोर, मुर्दाबाद !)* नौकरी पक्की करने के लिए आगामी चुनाव में अपने इस उम्मीदवार को कीमती वोट देकर विजयी बनाएं। उसके हाथों को सबल बनाएं। धन्यवाद।

(हूटिंग जारी है। नेता रंगमंच के बीच में आता है।)

भास्करन : *(नेता के हाथ से मैगाफोन लेते हुए)* जरा मैं भी दो बातें कर लूं। *(फिर भीड़ की ओर मुखातिब होकर)* दोस्तो, भाइयो ! मैं आप लोगों का मित्र भास्करन बोल रहा हूं। अपने उम्मीदवार के प्रति आप यह जो आदर दिखा रहे हैं, धन्यवाद प्रकट कर रहे हैं, वह जरा समाप्त हो जाए, तब मैं दो शब्द बोलूंगा। मैं भास्करन हूं, आपका साथी !

(हूटिंग शांत होती है।)

(नेता के भाषण की नकल में) हाथियो, महावतो और उनके साथियो ! अभी-अभी हमारे उम्मीदवार ने बताया कि कैसे वे हाथियों और महावतों की मुश्किलों को दूर करना चाहते हैं। इसके साथ-साथ मैं उनका ध्यान अपने जैसे उन हजारों पढ़े-लिखे बेरोजगारों की तरफ दिलाना चाहता हूं जो न तो हाथी हैं, न महावत। इसलिए हमें या तो महावत बनाया जाए या मूर्तियां ढोने का काम दिया जाए ... या फिर लट्ठे ढोने, चट्टान तोड़ने, सरकस के खेल दिखाने जैसे रचनात्मक कार्य में लगाया जाए।

(जरा रुककर, श्रोताओं से) तालियां ! तालियां ! ! मैं कह रहा हूं ताली बजाओ।

(लोग ताली बजाते हैं। नेता बेचैन होता है।)

जब हाथियों का राष्ट्रीयकरण हो जाए तो महावत बनने के लिए न्यूनतम योग्यता बी.ए. रखी जाए। महावतों का चयन संघ लोक सेवा आयोग द्वारा कराया जाए। वे तमाम बेरोजगार जो सही सिफारिश लाने और बड़े-बड़े डोनेशन देने में असमर्थ होने के कारण स्कूल-कालेज में नौकरी न पा सकें उन्हें महावत के चयन में तरजीह दी जाए। तालियां ।

(श्रोतागण तालियां बजाते हैं।)

शंकू : *(दूर से)* बस कर, पगले ! बी. ए. वाले महावत बन जाएं तो मेरे जैसों का क्या होगा ?

भास्करन : मिस्टर शंकू नायर को गलतफहमी हो गई है। ऐसे अनपढ़ महावत जो इस वक्त नौकरी में हैं, रिटायर होने तक काम करते रहें। सम्मान के साथ सेवा-निवृत्त होने के बाद पेंशन खाते रहें। तालियां !

(श्रोता ताली बजाते हैं। 'सुनो, सुनो' की आवाजें। भाषण जारी) आजादी से पहले ही नेता लोग कहते थे, शिक्षा को रोजगारी के साथ जोड़ा जाएगा। मैं पूछता हूं कि क्या हमारे भारत के किसी स्कूल या कालेज के

पाठ्यक्रम में 'हाथी पालन' एक विषय के रूप में शामिल किया है ? किसी युनिवर्सिटी में मुख्य या ऐच्छिक विषय के रूप में सिखाया जाता है ? सबसे पहला और अहम सवाल यह है, इस मामले में हमारा क्या रुख होना चाहिए ? आज के युवक मेरी तरह कला या विज्ञान की डिग्रियां जेब में डाले दर-दर भटकते रहें या 'हाथी पालन' का कोर्स करके किसी काम-धंधे में लगें ?

(आवाज : 'वाह, क्या बात है' !)

महावतों की नियुक्ति में इस समय चल रही एक और विसंगति की ओर मैं अपने प्रिय उम्मीदवार का ध्यान दिलाना चाहता हूं। महावत की नौकरी में पुरुष-प्रधानता बुरी तरह हावी हो गई है। हमें फौरन इस भेदभाव को खत्म करना होगा। महावतों के साथ महिला महावतों को भी इस काम में लगाया जाए। इस तरह महिलाओं के लिए समान अवसर सुनिश्चित किया जाए।

(नेता बेचैन होता है। भास्करन के हाथ से मैगाफोन छीनने की कोशिश। भाषण जारी।)

हम आशा करें वह दिन जल्दी आ जाए जब पढ़े-लिखे महावत और पढ़ी-लिखी महिला महावत कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ें। समाज और राष्ट्र की प्रगति में सहयोग दें। इसी आशा के साथ मैं अपना भाषण समाप्त कर रहा हूं। आप सबको धन्यवाद ! *(आवाज ऊंची करते हुए)*

हाथियों का राष्ट्रीयकरण हो !
पढ़े-लिखों को महावत बनाओ !
महिलाओं को महावत बनाओ !

(श्रोतागण नारे दुहराते हैं) क्यों भाषण कैसा लगा ?

(दूसरी ओर मंदिर में घड़ियाल बजने लगते हैं। शंखध्वनि के बीच में आरती शुरू हो जाती है। आरती के साथ आवाजें—)

'हे भगवान, मुझे पुत्र-संतान दो'

'हे दीनबंधु, मुझे नौकरी दो'

'हे भक्तवत्सल, चयन होने पर खीर चढ़ाऊंगा'

'मेरे भगवान, मीनाक्षी के लिए योग्य वर दो'

‘ ईश्वर, मुन्ने के बाप की शराब छुड़ा दो’

‘ प्रभु, मेरी धर्मपत्नी को सद्‌बुद्धि दो’

नेता : मंदिर में आज बहुत भीड़ है।

भास्करन : ये सभी भक्तगण हैं ... धर्मपरायण ... एकादशी व्रतधारी ... भजन करने वाले ... उपवास करने वाले भक्तजन हैं।

नेता : ओह ... हो, यह तो बहुत अच्छी भीड़ है। वह कमबख्त फोटोग्राफर कहां मर गया ?

(मैगाफोन लेकर मंदिर की तरफ मुड़ता है।)

भास्करन : *(फिर से लेक्चर झाड़ने का नेता की मंशा भांपकर)* क्या यह बहुत जरूरी है ?

नेता : क्या ?

भास्करन : क्या भाषणबाजी जरूरी है ? सोच लीजिए, भक्तजनों की हूटिंग बहुत खतरनाक होती है।

नेता : अरे, खतरों से लड़ना मेरा पेशा है। बड़ी-बड़ी मुसीबतों का सामना किया है मैंने। *(गला साफ करके शुरू हो जाता है)* प्यारे देशवासियो, भगवान के भक्तो ! आज हम सब लोग बहुत दुखी हैं अपने प्यारे केशवन की हालत देखकर ... भगवान का यह महान भक्त जिसने पिछले पचास सालों से न जाने कितने देवी-देवताओं को अपने सर-माथे पर बिठाया, भगवान का वही परम भक्त आज बीमारी का कष्ट भोग रहा है। आइए, हम सबलोग मिलकर भगवान से प्रार्थना करें कि वे अपने भक्त केशवन का दुख दूर कर उसे जल्दी अच्छा कर दें। केशवन के लिए शुभकामना करने के साथ हमें विचार करना चाहिए कि आने वाली पीढ़ियों के मन में अपने धर्म और संस्कृति के प्रति आस्था जगाने के लिए हमें कौन-कौन-से कारगर कदम उठाने हैं।

भास्करन : वाह, क्या फंसाया है आने वाली पीढ़ियों को भी ...

नेता : *(भाषण जारी)* हमारे धर्म और संस्कृति का जीता-जागता प्रतीक है केशवन। इसलिए इस महान कार्य में केशवन जैसे हाथी की सेवा हमारे लिए बहुमूल्य है। आप लोगों का क्या सोचना है कि सामंती तरीके से हाथियों को मंदिरों में बांधकर रखा जाए या उनका राष्ट्रीयकरण करके,

उन्हें राष्ट्र की संपत्ति बनाई जाए ? इस तरह की एक नई व्यवस्था...

भक्तों की आवाज :

हरि नारायण गोविंदा !
राष्ट्रीयकरण ना ना ना
हाथी के साथ मत खेलो !
हरि नारायण गोविंदा ।

(पैंतरा बदलता है) आप लोगों को गलतफहमी हो गई है। मैंने नहीं कहा कि हाथियों को मंदिर से बाहर निकाला जाए। मेरे कहने का मतलब है कि हर मंदिर में एक हाथी हो, लेकिन हाथी रखने में जो खर्च है वह मंदिर पर न हो, बल्कि वह खर्च सरकार दे।

आवाज :

हर हर महादेव !
केशवन हाथी देवता का हाथी
हर मंदिर में एक-एक हाथी
हर हर महादेव !

भास्करन : उनलोगों को राजी करके राष्ट्रीयकरण करना मुमकिन नहीं दिखता।

नेता : किसी भी धर्म-निरोध राष्ट्र में ...

भास्करन : धर्म-निरोध नहीं, धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र ... यानी सेक्यूलर ...

नेता : ... हर किसी को पूरा हक है कि वह अपने धर्म का पालन करे। राष्ट्रपिता गांधी जी ने भी कहा है कि अपने विश्वास के अनुसार धर्म के आचरण करने का अधिकार सभी को है। लुई पास्टर का भी यही मत था। मंदिरों में हाथी पालना हिंदुओं की ऐसी धार्मिक प्रथा है, जिसे कोई भी ललकार नहीं सकता। यह हमारे मौलिक अधिकारों में शामिल है। मैं धार्मिक विचार रखता हूं और धर्म-निरोध राष्ट्र में मेरी पूरी आस्था है। इस नाते मैं ऐलान करता हूं कि केशवन और मंदिर की सेवा के लिए मैं कोई भी कुर्बानी देने को तैयार हूं।

भास्करन : हां-हां, क्यों नहीं ? वामपंथी साहसिकता से दक्षिण-पंथी प्रतिक्रियावाद तक।

नेता : अगर किसी ने भी हाथियों का राष्ट्रीयकरण करने की कोशिश की तो

उसमें से मंदिर के हाथियों को छूट दिलाने के लिए मैं डटकर लड़ूंगा। इस संघर्ष में मैं सबसे आगे रहूंगा। यह बात मेरी समझ में नहीं आती कि आखिर हाथियों का राष्ट्रीयकरण क्यों करना चाहिए। निजी क्षेत्र के स्कूल-कालेजों के अध्यापकों को जो संरक्षण और सहूलियतें सरकार की तरफ से मिलती हैं, वे सारी सुविधाएं हाथियों और महावतों को भी मिलनी चाहिए। मैं सरकार को आगाह करना चाहता हूं कि कभी भूल से भी हाथी-राष्ट्रीयकरण के बारे में ना सोचे। हाथियों का राष्ट्रीयकरण एक ऐसी चिनगारी है कि अगर सरकार ने इसे छेड़ा तो अपने हाथ जला बैठेगी। इसलिए मैं कहता हूं, सरकार आग से न खेले।

भास्करन : *(दूसरी तरफ इशारा करते हुए जहां शंकू नायर वगैरह खड़े थे)* जरा होशियारी से। वे लोग वहीं खड़े हैं, सुन लेंगे।

नेता : *(मंदिर की तरफ बढ़कर धीमी आवाज से)* बस, यही याद रखिए कि मैं आपका विनम्र सेवक हूं, मुझे मिलने वाला हर वोट आपके पवित्र मंदिर और प्यारे केशवन की सहायता के लिए होगा। मैं आपको एक बार फिर पूरा यकीन दिलाना चाहता हूं कि अगर आप मुझे चुनेंगे तो मैं पूरी ताकत से हाथियों के राष्ट्रीयकरण के खिलाफ लड़ूंगा। केशवन को मंदिर के जुलूस जैसी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी से हटाकर मंदिर कमेटी ने न सिर्फ केशवन पर जुल्म किया है, बल्कि उनकी यह कार्रवाई धार्मिक समाज के प्रति अन्यायपूर्ण है। मैं पुरजोर शब्दों में सरकार से यह मांग करता हूं कि वह मंदिर कमेटी के सदस्यों के खिलाफ एक खुले जांच आयोग का आदेश निकाले। किसी ऐसे न्यायाधीश की अध्यक्षता में एक सदस्यीय आयोग बिठाए जिसका ओहदा उच्चतम न्यायालय के जज से कम का न हो। अगर सरकार एक विशाल जन-मोर्चे से बचना चाहती है तो फौरन जांच आयोग बिठा दे। यह मेरी अंतिम चेतावनी है। धन्यवाद।

आवाज :

शंभो शंकर गौरीश !
नेता तुम संघर्ष करो
हम तुम्हारे साथ हैं,
हर मंदिर में हो हाथी
शंभो शंकर गौरीश !

भास्करन : तो यह मोर्चा किस बात पर लगेगा ? हाथियों का राष्ट्रीयकरण करने

पर या न करने पर ?

नेता : राष्ट्रीयकरण और एक सदस्य वाला आयोग—सब बकवास है।

भास्करन : कमाल कर दिया आपने, उम्मीदवार जी ! यह तो एक तरह से चुनाव-समझौता रहा भक्त जनों के साथ। लेकिन पूरे दस मिनट भी नहीं हुए, आप इसी मंच से सांप्रदायिक शक्तियों पर आग उगल रहे थे।

नेता : तुम क्या समझो इन बातों को। मंच पर खड़े होकर पुरजोर भाषण दे सकते हैं कि हम सांप्रदायिक शक्तियों के साथ गठबंधन नहीं करेंगे। लेकिन उन लोगों का समर्थन भी तो हमारे लिए जरूरी है। सांप्रदायिक ताकतों का डटकर विरोध किए बिना, और उसी समय उनसे सांठगांठ किए बिना कोई भी राजनीतिक दल इस देश में टिक नहीं सकता।

भास्करन : सो तो सोलह आने ठीक है। सहकारी खेती और साझे के व्यापार की तरह हमारे यहां राजनीति भी साझेदारी की हो गई है। वह संप्रदायवादियों को गणमान्य और गणमान्य व्यक्तियों को सांप्रदायिक बनाती है। इस तरह दोनों को स्थिरता प्रदान करती है।

नेता : संविधान में धर्म-निरोध राष्ट्र का ...

भास्करन : धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र।

नेता : धर्म-निरोध कह दें तो क्या हो जाएगा ?

भास्करन : क्या होगा ?

नेता : धर्म-निरपेक्षता क्या है ? किसी के धर्म या आचार-विचार के मामले में दखल न देना, यही तो है ! संविधान और इसके संशोधनों में इसका पूरा आश्वासन दिया गया है। इसलिए हर धर्म को अपना-अपना हाथी रखने का पूरा अधिकार है। बस इसलिए राष्ट्रीयकरण से मंदिर के हाथियों को छूट दिलाकर हम धर्म-निरपेक्षता को और मजबूत बना रहे हैं। आई बात समझ में ?

भास्करन : यह बात तो समझ में आ गई। लेकिन इससे सार्वजनिक क्षेत्र में नौकरियां कम हो जाएंगी। नौकरियां कम हुईं तो मेरे जैसे लोग फील्ड पर ही रहेंगे, स्थायी रूप से।

नेता : ना, ऐसी नौबत नहीं आएगी। हम ऐसी शर्त रखेंगे कि महावतों का चयन संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से होना चाहिए। इसमें कौन-सी दिक्कत है ? छोटे भाई का हित देखना मेरे जिम्मे है ... वह फोटोग्राफर

कमबख्त कहां जाकर मर गया ? मुझे जल्दी जाना भी है...

भास्करन : ऐसे कैसे जा सकते हैं जब आपके आने का मकसद ही पूरा नहीं हुआ। आप यहां केशवन का हाल जानने के लिए आए थे न ?

नेता : और किसलिए ? उसका हाल पूछना था और उसके प्रति हमदर्दी जतानी थी।

भास्करन : पर आपने उसका हाल पूछा नहीं।

नेता : इसमें लंबी-चौड़ी पूछताछ क्या करनी है ? केशवन की हालत वही है जो पूरे समाज की है। समाज की हालत सुधरेगी तो केशवन की हालत भी सुधर जाएगी। अब हमें इस स्थिति के ऐतिहासिक कारणों पर ...

(फोटोग्राफर दाखिल होता है)।

अरे, आओ-आओ। बड़ी देर कर दी तुमने। अब जल्दी से एक बढ़िया-सी फोटो खींच दो। कल के अखबार में जाएगी।

(भास्करन से) किसी दूसरी पार्टी का कोई उम्मीदवार आया था यहां ?

भास्करन : अभी तक तो कोई नहीं आया। पर आ सकते हैं।

नेता : अच्छा, कोई आए तो किसी को यहां फोटो मत खिंचवाने देना। बस किसी तरह टाल देना। यह तुम्हारे लिए मुश्किल नहीं है। और तुम्हारा काम मैं कर दूंगा।

भास्करन : अच्छा बाबा, ख्याल रखूंगा। अब समय न गंवाइए। हाथी के करीब जाकर खड़े हो जाइए। फोटो बढ़िया निकलेगी।

नेता : मैं पास जाऊं तो यह कुछ करेगा तो नहीं ?

भास्करन : काहे को ? कुछ नहीं करेगा। गांधी बाबा का भगत है, पक्का अहिंसावादी है। अपना सिर इसके मुंह में रख दें तब भी कुछ नहीं करेगा।

(नेता पीछे की तरफ चलते हुए हाथी के करीब पहुंचता है। मुंह पर यत्नपूर्वक लाई मुस्कान। केशवन की सूंड से सट जाता है। मैगाफोन नीचे रखता है, ध्यान कैमरे पर। अचानक हाथी नेता को अपनी सूंड में लपेटकर जकड़ लेता है। नेता चीखता है, फिर आवाज बंद, आंखें बाहर। भास्करन की तरफ कातर दृष्टि से देखता है। झट फोटोग्राफर 'क्लिक' करता है और भाग निकलता है।)

भास्करन : *(हंसता है)* न-न, घबराइए मत। यह तो इसका प्यार करने का तरीका

है। यूं ही डर जाएंगे तो काम कैसे चलेगा ?

(केशवन से) क्यों भाई, क्या तुम इनसे नाराज हो ?

(हाथी हामी भरते हुए मस्तक ऊपर नीचे हिलाता है।)

अरे ... रे यह तो बहुत नाराज है। फोटो खिंचवाना शायद इसे पसंद नहीं है।

(केशवन 'ना' करते हुए सिर हिलाता है)। तब तो तुम इस बात पर नाराज होगे कि तुम्हारा हालचाल पूछने के लिए ये पहले क्यों नहीं आए ?

(केशवन ना में सिर हिलाता है।)

मुश्किल में पड़ गए न ? हां, उम्मीदवार जी, एक बात पूछूं, बुरा तो नहीं मानेंगे ?

नेता : *(दर्द और डर से घबराते हुए)* पूछ लो, जो चाहो पूछ लो।

भास्करन : केशव ! इन्होंने थोड़ी देर पहले एक ही सांस में दो परस्पर विरोधी बातें कहकर जनता को वेवकूफ बनाने की कोशिश की थी। तुम्हारी नाराजगी का कारण यही तो नहीं ? *(केशवन हामी भरते हुए दो बार मस्तक ऊपर-नीचे करता है)।*

देखो न, मैं जानता हूं इसके मन की बात। बात दरअसल यह है कि केशवन भला है। बहुत ही ईमानदार और सच्चा। भले ही बूढ़ा हो चुका है, पर किसी प्रकार का भी छल-कपट बरदाश्त नहीं कर सकता। बस इसीलिए आपसे नाराज है। *(नेता बड़ी मिन्नत से भास्करन की तरफ देखता है)* अच्छा, मैं जैसा कहूं, आप करेंगे।

(नेता 'हां' कहते हुए आंखें फाड़कर देखता है)। (केशवन से) केशव भैया ! अगर ये माफी मांग लेंगे कि एक ही सांस में दो परस्पर विरोधी बातें नहीं कहेंगे तो इन्हें छोड़ दोगे ?

(हाथी इनकार की मुद्रा में सिर हिलाते हुए नेता को जोर से भींच लेता है। नेता कराहता है)। तसल्ली नहीं हुई ? ठीक, अगर ये कसम खाएं कि आइंदा जनता को धोखा नहीं देंगे तो इन्हें छोड़ दोगे ?

(केशवन हां के अर्थ में सिर हिलाता है।)

(नेता से) शुक्र मान लो। केशवन मान गया है। क्या आप कसम खाने को तैयार हैं ?

(नेता 'एक छोटा-सा' कहकर कोई संशोधन का प्रस्ताव रखना चाहता है। केशवन जोर से भींच लेता है। दर्द से कराहता नेता हामी भरता है।)

भास्करन : अच्छा मेरे पीछे बोलिए।

मैं ...

नेता : मैं ...

भास्करन : धरती की कसम ...

नेता : धरती की कसम ...

भास्करन : आकाश की कसम ...

नेता : आकाश की कसम ...

भास्करन : कुलदेवी पराशक्ति की कसम खाकर कहता हूं ...

नेता : कुलदेवी पराशक्ति की कसम खाकर कहता हूं ...

भास्करन : कि मैं दल बदल नहीं करूंगा।

नेता : *(झिझकता है। हाथी की पकड़ मजबूत होती है। नेता दुहराता है)* कि मैं दल बदल नहीं करूंगा।

भास्करन : और अपने मन से ... वचन से ... कर्म से ...

नेता : और अपने मन से ...... वचन से ......कर्म से ....

भास्करन : किसी को धोखा नहीं दूंगा।

नेता : नहीं।

(केशवन जोर से भींचता है।) किसी को धोखा नहीं दूंगा।

भास्करन : यह सत्य है, यह सत्य है, यह सत्य है।

नेता : यह सत्य है, यह सत्य है, यह सत्य है।

(केशवन नेता को छोड़ देता है। नेता कमर दबाता एकदम भाग कर हाथी से दूर हो जाता है और जोर-जोर से सांस लेता है।)

भास्करन : क्यों, बहुत दर्द हो रहा है ?

नेता : इसने जरा ज्यादा जोर से दबा दिया। पर चलो, यह भी मेरा सौभाग्य

है कि इसने कुछ और नहीं किया।

भास्करन : मैंने आपको पहले ही बता दिया था कि पूरा भगत है, पक्का अहिंसावादी है।

नेता : लगता है, गर्दन में बल पड़ गया। किसी मालिशिये को ढूंढना पड़ेगा। *(जाने लगता है, फिर लौटकर आता है।)* हां, एक बात याद आ गई। किसी को बताना नहीं। जब यह मर जाएगा ...

भास्करन : क्या कहा ? जब यह ...

नेता : मेरा मतलब है, यह अब बहुत दिन नहीं जिएगा। ... मरने पर इसके दांत हमें दे देना। मुफ्त में नहीं मांग रहा हूं, थोड़ा-बहुत जो मुनासिव दाम होगा ले लेना। हाथी दांत का एक व्यापारी हमारा रिश्तेदार है। बेचारे का भला हो जाएगा। तुम जानते हो हमें हर प्रकार के लोगों के साथ काम करना पड़ता है। भला आदमी है, जब-तब सेवा करता रहता है। तुम्हें अच्छी कमीशन दिलवा देंगे। भूलना नहीं। और तुम्हारी बात मुझे याद है। बेफिक्र रहो। अच्छा, मैं चला। *(चला जाता है।)*

भास्करन : लगता है, कसम बड़ी जल्दी भूलते जा रहे हो। *(नेता मुड़कर खीसें निपोरता है, और चल देता है।)*

(केशवन को थपथपाते हुए) जीते जी तुम भले ही दो कौड़ी के न रहे, मरने पर सवा लाख के जरूर हो जाओगे। *(गाना)*

हाथी रे, मेरे साथी रे,
नश्वर तन का कोई न मोल
मेरे मीत !
दांत हैं बड़े अनमोल;
खड़े हैं कतार में दंत-वणिक
इंतजार है अंत समय का
साथी रे, तेरे अंत समय का;
यही है ढर्रा दुनिया का
हाथी रे ... मेरे साथी रे !

(गाना समाप्त होते होते 'मूंगफली लो, चमड़े की चप्पलें लो' की आवाज लगाता हुआ कंबर दाखिल होता है।)

कंबर : यह समापन गीत है ना ? गुरु, अकेले-अकेले रिहर्सल पूरा क्रर लिया है ?

भास्करन : अरे कहां ? बीच में एक और पाजी आ धमका !

कंबर : हां मैंने भी देखा। सरपट भागा जा रहा था। चेहरा उतरा हुआ, जैसे किसी ने एरंडी का तेल पिला दिया हो। क्या बीती उस नेता के साथ, गुरु ?

भास्करन : खास कुछ नहीं। केशवन ने उसे लाड़-प्यार से थोड़ा थपथपाया।

कंबर : हड्डी-पसली तो नहीं टूटी ?

भास्करन : अरे नहीं, कहा न जरा-सा गले लगाकर प्यार किया, फिर छोड़ दिया।

कंबर : शाबाश ! उस मनहूस को सबक सिखाना इसी के बस का काम है। जियो मेरे यार, खाओ। मूंगफली खा लो। *(मूंगफली खिलाता है और प्यार से सहलाता है।)* अच्छा किया, यार !

भास्करन : ऐसे लोग कोई सबक नहीं सीखते, कंबर ! न शरम, न हया। अपना स्वार्थ साधने के लिए कुछ भी कर सकते हैं।

कंबर :

कितनी सारी मूर्ति ढोता।
आतुर होकर व्यग्रता ...

भास्करन : चलो, हम लोग रिहर्सल पूरा करें। लगता है, अब नहीं आएगी कोई बला। गायक और ढोलकिये को बुलाओ न।

कंबर : आते रहेंगे वे लोग। अपन शुरू करें। एक बार पूरा पाठ तो याद कर लें।

भास्करन : कहां तक पहुंचे ? ... हूं ... मूर्तियां ढोने का प्रसंग था। *(कथा-वाचन की शैली में)* केशवन का दायित्व था मूर्तियां ढोना। देवताओं और देवियों की मूर्तियां। पार्श्व-देवताओं और परिवार देवताओं की मूर्तियां। केवल मूर्तियां ढोना पर्याप्त नहीं, मूर्तियों के लिए छाता छवाने वालों को और चंवर डुलाने वालों को सबको ढोना होगा। मूर्तियों और मूर्तियों के परिचारकों को केशवन बारी-बारी से ढोता फिरा। हमारे बीच में भी कुछ आदरणीय मित्र हैं जो मूर्तियां ढोने को जीविका मार्ग के रूप में अपना चुके है। मूर्तियां ढो-ढोकर भाग्यशाली बने अनेक मित्र हमारे बीच में हैं। रीढ़ की हड्डी जितनी अधिक टेढ़ी हो सके इसमें उतनी अधिक सफलता मिलती है। *(भास्करन और कंबर दोनों मिलकर 'ओट्टन तुल्लल' की नृत्यशैली में गाते हुए नाचते हैं।)*

कितनी सारी मूर्ति ढोता
आतुर होकर व्यग्रता से
जिजीविषा से मनुज-पुत्र;
भाग्य जगाने, पदवी पाने
अच्छी खासी जगह दिलाने
होने वाले जामाता को।
हथियाने को माल पराया
कितनी सारी मूर्ति ढोता,
बारी-बारी सिर पर लेकर
कितनी सारी मूर्ति ढोता !
मिला भाग्य यह कायम रखने
झपट्टा मारके पाया जिसको;
पति को उन्नति दिलवाने को
वंद रास्ते खुलवाने को;
नित्य नई बहु विध मूर्ति
वारी-बारी लेकर सिर पर
घूमना होगा तब तक जब तक
रीढ़ की हड्डी टूट न जाए।
मिलना है यदि भगवदनुग्रह
लक्ष्य करो कृपा भगवती की,
भूत गणों की दास गणों की,
प्रीति प्रतीति पानी होगी
तुच्छ गणों को खुश रखने को
ढोना होगा विग्रह सारे;
उल्लू अपना सीधा करने
ससुर बना लो गधे को भी !
लेश मात्र भी झिझक नहीं है
कपट देवता का ढोता विग्रह;
कितनी सारी मूर्ति ढोता
आतुर होकर व्यग्रता से
जिजीविषा से मनुज-पुत्र।

भास्करन : बहुत सारे लोग मूर्तियां ढो-ढोकर संपन्न और आदरणीय बन जाते हैं। किंतु केशवन तो दूसरों को संपन्न और आदरणीय बनाने के लिए मूर्तियां ढोता रहा। यही तो केशवन के जीवन का एकमात्र लक्ष्य रहा है।

कंबर : गुरु, तुमने कहा था न कि यहां 'मध्यांतर' देना चाहिए। कथा की चरम ... क्या कहते हैं ... चरम-सीमा ...।

भास्करन : हां, यहीं पर मध्यांतर देना उचित रहेगा। इसके बाद फिर से समां बंध जाए तो रोक लगाना मुश्किल होगा।

कंबर : तब तो जैसे कथा के प्रारंभ में मैंने घोषणा की थी, उसी तरह इंटरवेल की घोषणा कर दूं ?

भास्करन : बेशक। लेकिन गोंग देने और ढोलक बजाने की जरूरत नहीं है।

कंबर : ठीक है। एकदम सीधा-सादा। (घोषणा की शैली में) मित्रो, कथा के घटना-बहुल तथा संघर्षपूर्ण अगले चरण पर कदम रखें, इससे पहले दस मिनट के लिए ...।

भास्करन : हां, इंटरवेल।

(पर्दा)

दूसरा दृश्य

(भास्करन और कंबर उसी स्थिति में खड़े दिखाई देते हैं जैसे कि वे पर्दा गिरने से पहले खड़े थे। रिहर्सल जारी होता है।)

भास्करन : *(स्क्रिप्ट पलटते हुए)* कंबर, अगला गीत जरा क्लासिकल है। गायक और ढोलकिया कहां है?

कंबर : उस निगोड़े नेता को यहां खड़ा देखकर वे मंदिर की तरफ चले गए थे। अभी आते ही होंगे। तब तक अपन लोग चलाते रहें।

भास्करन : हां, ठीक कहते हो। शुरू हो जाएं। *(कथा प्रवचन की शैली में)* इस तरह केशवन ...

(पेंशन की उम्र तक पहुंचे विलेज अफसर का प्रवेश । ढेर सारी फाइलें सीने के साथ लगाए हुए हैं।)

विलेज अफसर : ऐ सुनो, कोई हाथीवान सनकू नायक को जानते हो ?

'सत्यानाश ! रिहर्सल पूरा करने नहीं देगा' *कहता हुआ भास्करन तथा गुस्से में भरा कंबर मुड़कर देखते हैं।*

विलेज अफसर : हाथीवान सनकू नायर को जानते हो?

भास्करन : क्या चाहिए आपको ?

विलेज अफसर : *(रोबीले स्वर में)* मैं पूछता हूं, सनकू नायर को जानते हो ?

भास्करन : *(स्क्रिप्ट को तह करके बरगद के चबूतरे पर डालते हुए)* ऐसा कौन होगा इस भारतवर्ष में जो शंकू नायर को नहीं जानता ? पर मैंने आपको नहीं पहचाना।

विलेज अफसर : *(रोब से)* तुम कहां के रहने वाले हो ?

भास्करन : माफ कीजिएगा, परदेसी हूं।

कंबर : *(विनयशीलता का अभिनय करते हुए)* और श्रीमानजी के बारे में पूछ सकता हूं ? अफ्रीका से या जापान से ?

अफसर : *(उसी रोब के साथ)* क्या मतलब ? यहां का पंचायत अफसर हूं मैं। अभी-अभी मेरा तबादला हुआ है यहां।

भास्करन : अब समझा। हालांकि हमारा-आपका अभी रू-ब-रू हुआ है, श्रीमान जी की पराक्रम-गाथाएं हम सुन चुके हैं। मिलने का सौभाग्य नहीं हुआ था।

कंबर : वाह, श्रीमान के पहुंचने से पहले श्रीमान का नाम यहां पहुंच गया ! *(भास्करन से)* पता है, जिस जगह श्रीमानजी काम पर थे, वहां की जनता इनको इतना चाहती थी, इतना चाहती थी कि छोड़ नहीं रही थी। स्थानीय जनता के स्नेह-बंधन से इन्हें छुड़ाने के लिए पुलिस को आना पड़ा।

अफसर : बकवास बंद करो। ये सब मनगढंत कहानियां हैं। कमीने लोगों की बनाई हुई ...

भास्करन : इसमें बुरा मानने की क्या बात है ? यह तो यही बता रहा था कि जनता आपका बड़ा आदर कर रही थी। सुना, उस मुकाम में आपने जो जनसेवा की थी, लोगों ने सरकार से उसकी जांच कराने की मांग उठाई है। क्या यह भी आपके प्रति आदर के कारण से नहीं ?

अफसर : जांच ? यहां जांच-वांच से कोई नहीं डरता। होने दो जांच।

कंबर : खैर, जाने दो। नकली बाल है, लेंगे?

अफसर : नकली बाल !

कंबर : नकली बाल, असली सुर्मा, कामसूत्र ...

अफसर : नहीं चाहिए ये सब चीजें। जानते हो, महावत कहां है ? एक शिकायत आई है मेरे पास।

भास्करन : हाथी की तबीयत खराब थी, इसलिए महावत खुद घाट पर लट्ठे उठाने गया है।

अफसर : ओह, तो हाथी सचमुच इतना बीमार है ! अच्छा ... सुनो, तुम उसे बुलवा सकते हो?

भास्करन : हाथी को ?

अफसर : शंकू नायर महावत को।

भास्करन : वह खुद ही चला आएगा थोड़ी देर में। लेकिन अगर आपको बहुत जल्दी है तो चौराहे पर जो ठेका है, वहां चले जाइए।

कंबर : एक लाटरी टिकट लीजिए न। पंजाब, पांच लाख। यू.पी., दस लाख। गुजरात डेढ़। तमिलनाडु, तीन। केरल-पांच। केवल एक रुपया लगा लो, भाग्यलक्ष्मी को घर बुला लो। *(खिल्ली उड़ाते हुए)* और अपने सुंदर तन-मन से लगाओ।

अफसर : बंद करो यह बकवास। कहे देता हूं, शरीफ आदमी की इज्जत पर...

कंबर : सुन रहे हो गुरु, क्या कह रहे हैं ? शरीफ लोगों को सुंदर तन से नफरत है। चलिए, कोई बात नहीं। कंब रामायण लीजिए।

भास्करन : कंबर, बात सुनो। अभी जाओ और शंकू चाचा से कहो, कोई उनसे मिलने आया है।

कंबर : तमाम शरीफ लोग कलश-पूजा के लिए दान देते हैं। मैं भी देखूं, आप शरीफ हैं कि नहीं ? *(बगल वाले पर्दे के समीप खड़े होकर जोर से)* शंकू चाचा ... ओ शंकू चाचा !

शंकू : *(दूर से)* कौन है बे !

कंवर : कोई तुमसे मिलने आया है। जल्दी से चले आओ।

शंकू : कौन है बे ? ... कुंची तो नहीं ?

कंबर : नहीं, एक शरीफ आदमी है।

शंकू : कौन ?

कंबर : मैंने कहा, मिस्टर शरीफ हैं। मुझे मिलाकर यहां तीन शरीफ आदमी हैं। *(भास्करन से)* गुरु, तुम्हें भी शामिल कर लिया है।

(तभी किसी नए ग्राहक को देखकर कंबर उसकी तरफ भागता है, विज्ञापन-वाक्य चिल्लाते हुए)।

भास्करन : *(सरकारी नौकर से)* क्या शिकायत है साहब, शंकू नायर के खिलाफ ?

अफसर : शिकायत केशवन के खिलाफ है।

भास्करन : केशवन के खिलाफ ? पिछले कुछ सालों से तो बेचारे ने किसी का काम

नहीं किया। फिर उसकी शिकायत किसने की ?

अफसर : शिकायत बहुत पुरानी है।

भास्करन : तब ठीक है। हो सकता है, केशवन के अच्छे दिनों में उससे फायदा उठाने वाले किसी महानुभाव को कोई शिकायत पैदा हुई होगी।

अफसर : अखबार में छपी खबरों के मुताबिक लगता है, केशवन अब अधिक दिन जिंदा नहीं रहेगा।

भास्करन : अब अधिक दिन जिंदा रहना ठीक भी नहीं।

अफसर : तुम कौन हो, जान सकता हूं ?

भास्करन : मैं इसी पंचायत में हूं। केशवन का दोस्त हूं। हम दोनों को खास कोई काम-धंधा न होने की वजह से कई बातों में हम दोनों समान रुचि रखते हैं।

शंकू : *(दूर से ही कुछ बोलते हुए दाखिल होता है)* अरे कौन साला आया है मुझसे मिलने? देख लो, यह मैं आया हूं।

भास्करन : *(अफसर से)* ये हैं शंकू नायर। केशवन के महावत। ... और चाचा, ये हैं यहां के नए पंचायत अफसर ... किसी शिकायत के सिलसिले में आए हैं।

शंकू : *(घबराकर)* शिकायत ? उसी की शरारत होगी, मथाई ताड़ी वाले की। साहब, सब झूठ है। सफेद झूठ। मैंने कुछ नहीं किया है। *(अदब से खड़ा हो जाता है।)*

भास्करन : नहीं-नहीं, शंकू चाचा, शिकायत तुम्हारे खिलाफ नहीं, केशवन के खिलाफ है।

शंकू : *(तसल्ली पाकर अकड़ते हुए)* हां, तभी तो। किसी की मजाल है पूरे हिंदुस्तान में जो मेरी शिकायत करे। सिर फोड़ दूंगा, हां !

भास्करन : इसीलिए तो केशवन के नाम शिकायत है।

शंकू : बिलकुल होनी चाहिए उस गधे के बच्चे की। बल्कि उसे तो सजा भी मिलनी चाहिए। घमंडी है।

अफसर : *(फाइल खोलते हुए)* यह शिकायत दर्ज कराई थी कोच्चांपल्लि मनक्कल रुद्ररु नारायणरु नंबूदरी ने।

शंकू : कौन ? कौन ?

अफसर : रुद्ररु नारायणरु नंबूदरी।

शंकू : *(पेट पकड़कर हंसता है)*

अफसर : अरे हंसता क्यों है ?

शंकू : यह ... यह शिकायत क्या यमलोक से आई है ? फर्जी लगती है साहब ? अरे, नंबूदरी को परलोक सिधारे कई साल बीत गए।

अफसर : कितने साल बीत चुके हैं ?

शंकू : नंबूदरी का देहांत उस साल हुआ जब मंदिर में महादीपोत्सव हुआ था। कितने साल हुए, भास्कर?

भास्करन : सुना है, महादीपोत्सव उस साल हुआ था जिस साल मैं पैदा हुआ था। उन्नीस सौ सैंतालीस का वर्ष था।

अफसर : ठीक है, शिकायत दर्ज हुई थी, 15 अगस्त, 1947 को।

भास्करन : तब तो कोई शक नहीं है, शिकायत रुद्ररु नंबूदरी ने ही की है।

शंकू : तो मतलब यह है कि शिकायत तब दर्ज हुई थी और उसका पता करने के लिए आज ही मुहूर्त निकला। जवाब नहीं आपकी फुर्ती का !

अफसर : कैसे होगा, देखिए इसमें सरकार के कई विभागों का काम है। थोड़ा समय तो लगता ही है। कितने चिट्ठी-पत्र जमा हो गए हैं इस फाइल में, देखो।

भास्करन : अजी साहब ! यह बेचारा महावत क्या जाने सरकारी दफ्तर की कार्यवाहियां। मैं तो कहता हूं, अभी भी आप जल्दी आ गए हैं। दुर्भाग्य नंबूदरी का जो अपनी पौध को सरकार के हाथों फलता-फूलता देख न पाए। कैसे यह शिकायत-बालिका युवती बनी और आज प्रौढ़ा हो गई है। इसे देखने के लिए नंबूदरी जीवित नहीं रहे। मेरी एक छोटी-सी विनती है साहब, इस फाइल को बंद न करें। इसकी हीरक जयंती होने दीजिए। फिर भले ही इस शिकायत को नंबूदरी के पास परलोक़ भेज दीजिए।

शंकू : अरे पगले, यह तो पूछो कि शिकायत क्या है ? मुझे तो लगता है, मेले में मूर्तियां उठाने की पगार जो केशवन के नाम पर मिलती थी, उससे नंबूदरी का पेट नहीं भरा होगा।

अफसर : शिकायत ... *(फाइल पलटता है)* शिकायत ... हां यही है। *(पढ़ता है)* पिछले कई वर्षों से इस केशवन हाथी का व्यवहार कुछ ऐसा ही है जिसमें अपने उच्च अधिकारियों जैसे महावत के प्रति द्वेष या अपने मालिक के प्रति घृणा की गंध आती है। अभी कल रात ही इसने भगवान जी की मूर्ति को जान-बूझकर नीचे गिरा दिया। फिर सिर ताने ऐसा खड़ा रहा मानो कोई वीरता का कार्य किया हो और चूंकि किसी हाथी के लिए अपने उच्च अधिकारियों की आज्ञा का उल्लंघन करना कानून के विरुद्ध है, जनता की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि इस हाथी पर कड़ा नियंत्रण रखा जाए। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि इस हाथी पर निगरानी रखने के लिए शीघ्र ही सशस्त्र पुलिस का बंदोबस्त किया जाए, जब तक इसके आचरण में सुधार न आ जाए।

भास्करन : तो पुलिस वालों का आचरण ठीक करने के लिए किसे निगरानी पर रखा जाए ?

शंकू : जरा चुप रहो। ताड़ी के ठेके पर बैठी पुलिस यह बात सुन ले तो खैर नहीं होगी।

अफसर : रुद्ररु नंबूदरी का कोई वारिस जीवित है ?

शंकू : वारिस तो जिंदा है, लेकिन विरासत कुछ नहीं बची। क्यों, भास्कर ?

भास्कर : जमींदारी का लगान, प्रिवी पर्स, चढ़ावा, किराया जब कोई कुछ देता नहीं तो विरासत कहां से बचेगी !

शंकू : जब शिकायत हो गई है कि यह सिरफिरा मेरा कहा नहीं मानता, अपने मालिक के प्रति हिमाकत दिखाता है तो पुलिस क्यों नहीं आई ?

अफसर : पुलिस को ऐसे ही भेजना कोई आसान काम है ? सबसे पहले शिकायत की एक प्रति गृह विभाग को भेजी गई, यह जानने के लिए कि इस प्रकार की प्रार्थना करना संविधान के अनुकूल है या नहीं। अब चूंकि एफ.आर. और एस.आर. में इसके संबंध में कोई उल्लेख नहीं था और न ही कोई पूर्व दृष्टांत मिला, गृह विभाग ने वन विभाग को भेजा और प्रार्थना की कि वह अपनी राय दे। उत्तर में वन विभाग से आया वह पत्र ... पत्र *(फाइल उलटता है)* हां, यह रहा ... चूंकि यह हाथी एक वन से वन विभाग की नियमावली धारा 5 उपधारा 7 के अनुसार गड्ढा संक्रिया से पकड़ा गया तथा धारा 18 एवं 20 के अनुसार पालतू हाथियों को नियोजित करके पूरे सुरक्षा प्रबंध के साथ गड्ढे से निकाला गया

और धारा 57 उपधारा 37 में उल्लिखित शर्तों का अनुपालन करते हुए लगातार तीन दिन तक अखबारों में विज्ञापन दिया गया और धारा 420 उपधारा 620 दोनों को एक ही अनुक्रम में पढ़ने पर जो अर्थ निकलता है उसमें व्यतिक्रम के बिना सार्वजनिक रूप से नीलामी करके नीलामी की राशि का चालान सरकारी खजाने में जमा करवाने, रसीद पाने के बाद बोली लगाने वाले व्यक्ति को धारा 419 की उपधारा 210 के अनुसार हाथी सौंप देने के उपरांत चूंकि इस संबंध में वन विभाग का कोई दायित्व नहीं रह गया है, अतः इस शिकायत के विषय में गृह विभाग अपनी ओर से कार्रवाई ले सकता है अथवा वर्तमान नियमावली में संशोधन की आवश्यकता अनुभव करने की स्थिति में इसके निमित्त एक आयोग गठित करने का आदेश दे सकता है।

भास्करन : इस सबसे मतलब क्या निकला ?

अफसर : क्यों, तुम्हें अपनी राष्ट्रभाषा तक समझ में नहीं आती क्या ? मतलब साफ है, वन से पकड़े गए हाथी को नीलामी में बेचने के बाद वन विभाग के ऊपर उसकी कोई जिम्मेदारी नहीं है।

भास्करन : इतनी-सी बात को घुमा-फिराकर कहने की क्या जरूरत थी ?

शंकू : तो फिर जिम्मेदारी किसकी है ?

अफसर : यही तो मुसीबत है। *(दूसरी फाइल पलटता हुआ)* लो यह रहा ... वन विभाग से लौटाई गई शिकायत को गृह विभाग ने देवस्वम बोर्ड को भेजा। बोर्ड ... हां, बोर्ड का उत्तर यह रहा। *(पढ़ता है)* जैसे.कि देवस्वम विभाग की नियमावली की धारा 132 की उपधारा 152 में उल्लिखित है, देवस्वम विभाग के अधीनस्थ अथवा देवस्वम विभाग द्वारा समय-समय पर नियमानुसार अधिगृहीत मंदिरों में मेशांति (प्रधान पुजारी), की शांति (सहायक पुजारी), श्रीकार्यम (प्रबंधन), ढोल-मृदंग वादन, गायन, नादस्वर-वादन, झाड़ू-बुहारी, बर्तन मांजना, हाथी पालन इत्यादि कार्यों के लिए आवश्यक तथा धारा 122 में वर्णित उत्सव, विशेष समारोह आदि अवसरों के लिए अस्थाई तौर पर, परंतु अवधि निश्चित करके बनाए जाने वाले पदों हेतु सेवा अनुबंध में हस्ताक्षर के उपरांत अथवा मौखिक आदेश के माध्यम से की जाने वाली नियुक्तियों को छोड़कर अन्य किसी प्रकार की नियुक्ति करना वर्जित है तथा यदि उपर्युक्त प्रकार से नियुक्त कर्मचारियों की सेवा यदि असंतोषजनक पाई गई तो उनके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई की जा सकती है या उन्हें

सेवा से मुक्त किया जा सकता है, फिर भी चूंकि अनुसूची 1 में वर्णित कर्मचारियों की सूची में मंदिर के हाथी, मंदिर के बैल इत्यादि को सम्मिलित नहीं किया गया है, इसलिए या तो धारा 1 में संशोधन लाकर हाथी, बैल आदि को प्रधान पुजारी, सहायक पुजारी इत्यादि कर्मचारियों की अनुसूची में शामिल किया जाए अथवा हाथी के नाम पर लेने योग्य कार्रवाई महावत पर निक्षिप्त करके हाथी और बैल के स्थान पर उन्हें उत्तरदायी बनाने के लिए यदि गृह विभाग देवस्वम विभाग को प्राधिकृत नहीं करता तो धारा 14 उपधारा 7,8,9 के आधार पर अथवा उपधारा 10,11,12 के आधार पर आगे की कार्रवाई ...

भास्करन : आगे पढ़ने से पहले जरा सांस ले लीजिए। बुरी तरह हांफ रहे हैं *(पंखा झलता है)*

शंकू : बिलकुल ठीक कहा। क्यों न मंदिर के नादस्वरम-वादक को बुलाकर उससे पढ़वाया जाए। वह दम भर लेगा और एक ही सांस में पूरा कर देगा।

भास्करन : जवाब नहीं इसका। यह तो बहुत बढ़िया गेय कृति है। इसे आनंद भैरवी या ऐसे ही अच्छे राग में गाया जा सकता है। राग कोई भी हो, लेकिन आशय समझ में नहीं आएगा।

अफसर : यह कोई कहानी या नाटक नहीं कि पढ़कर आस्वादन किया जाए।

भास्करन : कहानी और नाटक तो आम जनता के लिए होते हैं। अरे यह तो वेद है, ऐसा निगूढ तत्व है जिसे कोई पढ़ने का साहस करे भी ना। पढ़ ले तो भी समझे ना, समझने पर भी उसकी अनेकार्थता के जंजाल में फंसकर संशय मिटे ना।

अफसर : बताइए आप लोगों ने क्या समझा ?

शंकू : *(भास्करन से)* अरे बुद्धू ! अगर कानून की बातें ऐसी भाषा में लिखी जाएं जो मेरे-तेरे जैसा भी समझ ले तो फिर इन लोगों की क्या जरूरत है ? सरकारी कार्यवाहियां अगर हर ऐरे-गैरे की समझ में आ जाएं तो ये अफसर लोग क्या करेंगे ? अफसर जी, जितना हमने समझ लिया आज के लिए उतना काफी है।

भास्करन : उतना काफी है ?

शंकू : काफी के बाद फालतू भी है।

भास्करन : यह खूब रहा ! अरे, इन्होंने लिखा है केशवन ने मूर्तियां तोड़ने का जो अपराध किया है उसके लिए केशवन के बजाए उसके महावत के विरुद्ध कार्रवाई करके सजा दी जाए।

शंकू : ऐं ? मेरे खिलाफ कार्रवाई ? ... अरे अफसर साहब, मैंने तो कोई अपराध नहीं किया।

अफसर : नहीं, इसमें लिखा है कि क्या हाथी के बदले उसके महावत पर कार्रवाई की जाए या न की जाए ?

भास्करन : आम आदमी की भाषा में कहें तो इसका मतलब यह हुआ कि अगर तुम इनको खुश कर दो तो तुम्हारे खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी।

अफसर : *(अर्थपूर्ण हंसी के साथ)* अरे, चिंता काहे की ! हम किसलिए हैं ? सब संभाल लेंगे। अब फाइल की कहानी सुनो। फिर यह फाइल शिक्षा विभाग में गई। वहां से समाज कल्याण विभाग में, वहां से परिवार नियोजन विभाग में और उद्योग विभाग में भेजी गई। इस बीच में यह आदेश हुआ कि कैबिनेट द्वारा स्वीकृत सत्ता विकेंद्रीकरण नियमावली के अनुसार पंचायत की राय ली जाए। उन्हीं दिनों अविश्वास प्रस्ताव आ जाने और अदालती मामले की वजह से पंचायतों को निष्क्रिय बना दिया गया। अब यह आदेश हुआ कि पंचायत अफसर खुद जाकर मामले की तहकीकात करें और रिपोर्ट पेश करें। *(रोब के साथ)* बस, अब फैसले का रुख वही होगा जिसका संकेत मैं अपनी रिपोर्ट में करूंगा। अब सारा फैसला मुझे ही करना है।

भास्करन : तब तो ठीक है। फौरन जबरदस्त पुलिस बंदोबस्त की सिफारिश कर दीजिए। वरना अगर बेचारा सचमुच मर गया तो आपकी ये सब धाराएं और उपधाराएं भी उसे अपनी जगह से हिला न सकेंगे। *(केशवन से)* और अगर तुम्हारा ऐसा भाग्य रहा तो दोस्त, फिर पूरे राजकीय सम्मान के साथ दफनाए जाओगे। पूरे राज्य के लिए एक दिन का सार्वजनिक अवकाश घोषित होगा। अवकाश घोषित न हुआ तो बंद ! वाह, किसी का भाग्य जगे तो ऐसा जगे !

अफसर : हां, मगर इस वक्त इसकी जो हालत है, उसका ख्याल रखते हुए अगर पुलिस बंदोबस्त का इंतजाम किया गया तो अखबार वाले मामले को यों उछालेंगे, 'अधमरे हाथी की पहरेदारी के लिए पुलिस क्यों ?' तब इसका उत्तर देते-देते मेरी शामत आ जाएगी।

भास्करन : और मान लो निगरानी न होने से यह किसी को मार बैठा, तो ...

अफसर : यह भी आपने ठीक कहा। सचमुच अगर यह किसी को मार बैठा तो अखबार वाले शोर मचाएंगे, ' जनता की सुरक्षा के लिए हाथी पर पहरा क्यों नहीं बिठाया गया ?' फैसला ऐसा करें या वैसा, जवाबदेही मेरे ऊपर आएगी। मैं तो दोनों तरफ से मरा। लेकिन यह सब मेरे साथ नहीं चलेगा। मेरी नोटिंग कुछ इस प्रकार होगी—'हाथी केशवन की हालत इस समय बहुत ही खराब है। वह बीमारी से बहुत ही निढाल और बुढ़ापे से कमजोर हो चुका है। इस हालत को देखते हुए उस पर पहरा बिठाने की जरूरत महसूस नहीं होती, परंतु अगर गुस्से में आकर वह कभी किसी पर हमला कर बैठे इसके बारे में कहना संभव नहीं है, ऐसी स्थिति में पुलिस पहरे की आवश्यकता से इनकार भी नहीं किया जा सकता।'

भास्करन : इसका मतलब क्या हुआ ? पुलिस तैनात करना जरूरी है या नहीं ?

अफसर : है तो है, नहीं तो नहीं। यह फैसला बड़े अफसर खुद करेंगे। अपन को जिम्मेदार न ठहराएं, बस।

भास्करन : जवाब नहीं आपकी सूझ-बूझ का ! सरकार को चाहिए कि वह आपको सरकारी अधिकारियों का कुलगुरु बनाएं। ऐसा निस्संग और निर्गुण अफसर कहीं नहीं मिलेगा।

अफसर : सरकारी नौकरी में जिम्मेदारी ले ली तो समझो, डूब गए।

भास्करन : अगर जिम्मेदारी नहीं ली तो पदोन्नति ! तो फिर आपलोग तनख्वाह किस बात की लेते हैं ?

अफसर : जो हमसे ज्यादा वेतन पाते हैं, उनका हुक्म मानने के लिए। जब कहते हैं यह करो तो हम यह करेंगे, जब कहते हैं कि वह करो तो हम वह करते हैं। जब कुछ भी नहीं कहते, ऊपर से निर्देश नहीं होता तो इधर-उधर छुए बिना खड़े रहना हमें आता है। हर समझदार सरकारी नौकर यही करता है।

शंकू : कोई पच्चीस साल हुए जब मैंने अर्जी दी थी कि मेरी बाकी पगार मुझे दिलाई जाए, उसका क्या बना ?

अफसर : तुम्हारी अर्जी जब मेरे पास आए तो मुझे याद दिला देना—देख लूंगा।

भास्करन : अभी इतनी जल्दी कहां से आएगी ? वन विभाग से निकलकर उत्पादन-कर विभाग में पहुंचेगी, वहां से परिवार नियोजन विभाग और

लोक निर्माण विभाग से होकर ही तो पंचायत में आएगी।

शंकू : पच्चीस साल हुए, तनख्वाह नहीं है।

भास्करन : केशवन को भी तो कुछ नहीं मिला।

शंकू : जब मुझे ही नहीं मिल रही है, उसका सवाल ही कहां उठता है ? अफसर साहब, कुछ कीजिए न।

अफसर : ठीक हो जाएगा, भई ! अर्जी जब मेरे पास आएगी मुझे याद दिला देना। *(फाइलें समेटते हुए)* इस मामले में तुम्हारे ऊपर कार्रवाई की जाए या नहीं, इस पर जल्द ही रिपोर्ट लिखूंगा।

शंकू : अफसर साहब ! मुझे बचाइए।

भास्करन : इसका जरूर कुछ कर दीजिए। बहुत ही भले आदमी हैं शंकू चाचा। बस जैसे ही उनको अपनी बकाया तनख्वाह मिली वह आपके घर पर मिठाई के साथ हाजिर होंगे और आपको खुश कर देंगे।

अफसर : अरे, सभी लोग ऐसा ही कहते हैं। पर काम निकल जाने पर कोई पूछता नहीं। संकट रहने तक राम का नाम लेते हैं, संकट टलने पर राम को भूल जाते हैं।

(सड़क पर खड़े-खड़े नेता भास्करन का नाम लेकर पुकारता है)
'भास्करन, ओ भास्करन !'

भास्करन : कौन है ? *(बगल वाले पर्दे के पास जाकर झांकता है)* बोलिए। क्या बात है ?

(नेता की आवाज) अपना मैगाफोन भूल गया।

शंकू : कौन है उधर ?

भास्करन : नेता है, हमारा उम्मीदवार। *(जोर से)* यहीं है मैगाफोन। आराम कर रहा है। आकर ले जाइए।

नेता : भई ! जरा पहुंचा दो न ?

अफसर : *(झांकता है)* अच्छा, अच्छा। नेताजी हैं ? *(भास्करन से)* जरा बुलाओ तो। मैं खुद मिलना चाहता था।

भास्करन : *(जोर से)* आप यहीं आइए। पंचायत अफसर बुला रहे हैं। आपसे कोई समझौता...

नेता : साहब उधर हैं ? ...और महावत ?

भास्करन : वह भी है।

शंकू : क्या करेगा मुझसे मिलकर ?

भास्करन : तुम्हारे शुभचिंतक हैं न, इसी नाते याद किया होगा।

शंकू : शुभचिंतक ! ... दगाबाज़। बकाया तनख्वाह दिलवाने का वादा करके कितनी बार ... *(गुस्से में)* मेरा मुंह न खुलवाओ।

(नेता दाखिल होता है। चेहरे पर हाथी का आतंक। ओटों पर बनावटी हंसी। अफसर नेता को प्रणाम करता है।)

नेता : नमस्कार। ही ... ही ... मैं खुद आपकी तरफ आ रहा था। बीच में कुछ काम ऐसा पड़ा .... आप जानते हैं, जन-सेवा करते हुए कितनी मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं। *(शंकू नायर से)* बेफिक्र रहो शंकू नायर, सब ठीक हो जाएगा।

अफसर : और हमारा काम ?

नेता : कौन-सा ? वह ... जांच ? निश्चिंत रहें, साहब ! ऐसा कुछ नहीं होगा।

अफसर : अरे नहीं, जनाब ! मेरा मतलब सड़क परियोजना से था। ... पंचायत की सड़क।

नेता : *(हंसते हुए)* अच्छा, अच्छा ! ठीक हो गया है साहब, निश्चित रहें।

(अफसर को परे ले जाता है। दोनों एकांत में फुसफुसाहहट में बात करते हैं, कभी इशारों में कभी हंसी मजाक में, कभी गंभीर मुद्रा में। लगता है, कोई षड्यंत्र रचा जा रहा है।)

(भास्करन थोड़ी देर तक देखता रहता है। फिर हाथी की सूंड सहलाते हुए)

खा रहे मलाई धर्माधिकारी
पांचों उंगलियां घी में
गुट बनाकर लूट रहे हैं
नेता हाकिम अमला।
मिल-बांटकर खा गए तो
क्या बचेगा केशवा !
देवता के भोग में ?

(शंकू नायर कमर से छुरा लेकर तेज कर रहा है, पत्थर पर रगड़-रगड़कर। अब नेता और अफसर की बात साफ सुनाई दे रही है।)

नेता : कहा न, बड़े साहब खुश हो गए।

अफसर : केवल बड़े साहब की खुशी से क्या होने वाला है ? कैसे पहचानेंगे, किसने सेवा की अंधेरे में ?

नेता : आप क्यों फिक्र करते हैं ? साहब को एक-एक चीज का पता रहता है। आप बेशक शाम को मुलाकात कर लीजिए। सब ठीक मिलेगा। मेरे रहते चिंता काहे की ?

भास्करन : सुना है, सड़क निर्माण का ठेका सहकारी समिति को नहीं मिला है, बल्कि चोरों के सम्राट उस पूंजीपति को सौंपा गया है।

अफसर : समिति वालों ने पिछला काम कहां पूरा किया है ? ऐसे में उसे नया ठेका कैसे मिलेगा ?

भास्करन : पिछले साल जो काम समिति ने पूरा किया, उसका भुगतान नहीं हुआ। यह तो सहकारी समिति है, पूंजीपति थोड़े ही है। पैसा कहां से आएगा ?

नेता : वाह, तुम वकालत करने आए हो ? सरकार तो काम देखना चाहती है, बहाने नहीं चलेंगे। काम उसे मिलता है जिसमें काबिलियत है।

भास्करन : ओह ... हो ! आपने तो मुद्दई को बना दिया मुद्दालह। भूल गए, आप ही तो थे समिति के सचिव?

नेता : हां, सचिव था। जब देखा, कार्यक्रम के मुताबिक काम करने का माहौल नहीं है, हट गया मैं। इस्तीफा दे दिया सचिव के पद से।

भास्करन : हां, हां। जब आपने देखा, अपने कार्यक्रम के मुताबिक काम नहीं चल रहा था, चुपके से खिसक गए।

शंकू : ऐसा नहीं है भैया, ये तोड़ना चाहते थे समिति को। अपना उल्लू सीधा करने के लिए अंदर घुसे, जितना मिला हड़प लिया और आज कीचड़ उछाल रहे हैं।

नेता : देखो, शंकू, अपनी हद से बाहर जा रहे हो। फिजूल बात करने की कोई जरूरत नहीं है। हां, कहे देता हूं।

शंकू : बड़े आए हद-बेहद के पारखी ! अब तुमसे बात करूंगा तुम्हारी हद के

अंदर आकर ... जहां कोठी बना रहे हो, उसकी दूसरी मंजिल पर।

अफसर : आपको जरूर गलतफहमी हुई है। ये केवल यहां की बात नहीं है, हर कहीं सरकारी समितियों की यही कहानी है। जहां देखो, घोटाला !

भास्करन : ना, मैं नहीं मानता। घोटाले उन्हीं सोसाइटियों में होते हैं जिनका संचालन गलत व्यक्तियों और उनके चमचों के हाथ पड़ जाता है। ऐसे व्यक्तियों के हाथ जो सारा कुछ हड़पने पर तुले होते हैं।

नेता : *(अफसर से)* जनाब, अभी चलेंगे या रुकेंगे ?

अफसर : जरा-सा काम है। थोड़ी देर बाद चलूंगा। ... हां, शाम को जरूर मिलना है। पिछले हफ्ते की तरह नागा न हो जाए।

नेता : *(भास्करन से)* ... उसे ... क्या नाम है, जरा उठाकर दोगे ? *(मैगाफोन की तरफ इशारा करता है जो हाथी के पास पड़ा है।)*

भास्करन : कुछ नहीं करेगा, खुद आकर ले जाइए।

नेता : जरा उठा दो न, प्लीज !

(भास्करन मैगाफोन उठाकर देता है। नेता उसे लेकर चलने लगता है। सामने से कंबर आता है। दोनों एक-दूसरे को घूरते खड़े हो जाते हैं—आक्रामक तेवर से। फिर नेता निकल जाता है।)

कंबर : यह निकम्मा दुबारा किसलिए आया था ?

भास्करन : पंचायत अफसर से मिलने के लिए ।

कंबर : बढ़िया ! दोनों मिल जाएं तो हो गया कल्याण। एक सांपनाथ तो दूसरा नागनाथ !

अफसर : बकवास बंद करो ... वरना ...

शंकू : वरना क्या करोगे ? अंदर कर दोगे यही न ? *(कंबर से)* सावधान भैया, जो अंदर गया बाहर नहीं आया है।

कंबर : श्रीमान जी, आप मिलेंगे न बाहर ? वह काफी है।

अफसर : अच्छा शंकू नायर, मैं अभी चलूंगा। तुम कोई फिक्र न करना। मैं रिपोर्ट ठीक कर दूंगा। अच्छा ! *(जाने लगता है। फिर जैसे कुछ याद आ गया हो, लौटकर आता है)* अरे, मैं एक बात भूल ही गया था। ऐसा है कि मेरे बच्चे सोते समय चौंक उठते हैं। बीमारी काफी पुरानी हो चुकी है।

वैद्य जी का कहना है कि अगर उनकी कलाई में हाथी की दुम का एक बाल बांध दिया जाए तो वह ठीक हो जाएगा। अब मेरे पास इतना वक्त कहां कि हाथी की दुम ढूंढता फिरूं ? और मेरी घर वाली है कि बस हर वक्त सर खाती रहती है। सोचा, जब यहां आया ही हूं, अच्छा हो आठ-दस बाल मिल जाएं तो ...

(शंकू सुन्न खड़ा रहता है।)

भास्करन : सुना नहीं चाचा, साहब आप से क्या पूछ रहे हैं ?

शंकू : सुन लिया भाई, सुन लिया ... मेरा और केशवन का आपस में लाख झगड़ा हो, पर आज तक मैंने कभी किसी को उसका एक बाल नहीं छूने दिया। केशवन और शंकू नायर एक शरीर दो प्राण हैं।

भास्करन : क्यों शंकू चाचा ! तुम्हें अच्छी रिपोर्ट की जरूरत नहीं ? तुम्हें क्या अपनी पगार नहीं चाहिए जो ऐसी बातें करते हो ? *(अफसर से)* आप खुद जाकर तोड़ लीजिए, जितने चाहें।

अफसर : अरे, मैं तो किसी से कुछ भी नहीं मांगता, पर घर वाली की झिकझिक के कारण ...

कंबर : आपको दिन दहाड़े जागते हुए भी दौरे पड़ते हैं। मेरी मानिए तो अपनी दोनों कलाइयों पर एक-एक बाल बांध लीजिए। फिर देखिए उसका असर ! आपको देखकर घरवाली डर जाएगी।

(अफसर गुस्से में भरकर कंबर को घूरता है) ही-ही-ही, मजाक में कह गया, सर ! बुरा न मानिए। फिर आप ऐसे-वैसे डरने वाले भी नहीं !

(शंकू नायर तैश में निकल जाता है।)

भास्करन : जाइए जनाब, जितने चाहें तोड़ लीजिए।

अफसर : ना भाई, मैं कैसे तोड़ सकता हूं। तुम्हीं तोड़ दो न !

भास्करन : अच्छा, हमीं तोड़ेंगे। मगर आपको आकर बताना होगा, कौन कौन-सा चाहिए ? *(कंबर से)* आओ, कंबर, तोड़ देते हैं आप के लिए।

(भास्करन और कंबर हाथी के पीछे जाते हैं। वहीं से अफसर को बुलाते हैं)।

अफसर : मैं पास आऊं तो क्या यह मारेगा ?

भास्करन : वह बेचारा क्या करेगा ? जल्दी कीजिए, जितने चाहें तोड़ लीजिए।

(अफसर डरते-डरते पास आता है। करीब आने पर हाथी सूंड हिलाकर फाइलें नीचे गिरा देता है। अफसर चिल्लाता हुआ भागता है।) अरे ... रे ! डरिए मत। वह तो यूं ही खेल रहा है।

अफसर : वह और उसका खेल ! ना भाई, मुझे नहीं चाहिए उसके बाल। लाओ मेरी फाइलें, दे दो मुझे। रिपोर्ट तो आखिर मैं ही लिखूंगा न। देख लूंगा। परिवार-का-परिवार सड़क पर न खड़ा किया तो मेरा नाम ...

कंबर : न न न ... ऐसा न कीजिए। यह गरीब तो बहुत भला है बेचारा। बाल तो क्या, आप इसकी दुम भी उखाड़ लें तो भी कुछ नहीं कहेगा।

(भास्करन फाइल उठाकर अफसर के हाथ में रखता है। अफसर गुस्से में बड़बड़ाता हुआ निकलता है)

अफसर : हां दिखा दूंगा बच्चू को, सरकारी अफसरों से मजाक करने का अंजाम क्या होता है ... हूं। *(कंबर पीछे-पीछे चलता है।)*

भास्करन : *(केशवन को सहलाते हुए)* बुड्ढा हो गया, बीमार हो गया। कम से कम अब तो हिमाकत से बाज आता ! मंदिर से निकाल दिया गया, आदरणीयों का कोप-भाजन बना, तब भी...

(सफेद कोट पहने लंबे स्टेथस्कोप के साथ एक व्यक्ति दाखिल होता है। देखने में डाक्टर लगता है।)

डाक्टर : क्या यही केशवन है ?

भास्करन : *(धीमी आवाज में)* लगता है, एक और बीमारी आ गई। *(डाक्टर से)* हां, यही है मिस्टर केशवन। और आप ?

डाक्टर : मैं डाक्टर हूं, मिस्टर ! और आप ?

भास्करन : मैं मिस्टर भास्करन हूं ! मिस्टर केशवन का दोस्त।

डाक्टर : महावत ?

भास्करन : न न ... मिस्टर महावत घाट पर लट्ठे ढूंढने गए हैं। आजकल मिस्टर केशवन की तबीयत जरा ढीली चल रही है, इसलिए महावत खुद ही लट्ठे ढो रहे हैं और पुजारी भी भगवान की मूर्ति को खुद अपने सिर पर उठाकर निकलते हैं। *(गाता है)*

कितनी सारी मूर्ति ढोते
आतुर होकर व्यग्रता से

जिजीविषा से हम सब मानव;
लेश मात्र भी झिझक नहीं है
कपट देवता के विग्रह ढोते।

हां, तो डाक्टर साहब, आप कैसे आए हैं ?

डाक्टर : केशवन को देखने। आल केरल कौंसिल फार दि ट्रीटमेंट आफ केशव .....

भास्करन : क्या ? क्या ?

डाक्टर : हमारे लीडरों ने मिलकर केशवन का इलाज करवाने के लिए एक परिषद बनाई है—अखिल केरल केशवन चिकित्सा परिषद ... मुझे उसी कौंसिल ने भेजा है।

भास्करन : लेफ्ट है या राइट ?

डाक्टर : क्या मतलब ?

भास्करन : मैं पूछ रहा हूं कि यह कौंसिल दक्षिणपंथी है या वाम ?

डाक्टर : ओह ... समझा। अखिल केरल केशवन चिकित्सा परिषद लेफ्टिस्ट है। यूं इस कौंसिल का देश की दूसरी संस्थाओं और राजनीतिक दलों से गठजोड़ भी है।

भास्करन : तो इसका मतलब निकला कि केशवन के नाम पर हर पार्टी ने दुकान खोल ली है। *(गाता है)*

जीते जी सुध लेने को कोई न रहा संग में
मरने को हुए भीड़ लगी है, दवाई भी संग में।

तो डाक्टर साहब, अब केशवन मर सकता है न ?

डाक्टर : क्यों ?

भास्करन : क्योंकि अब डाक्टर पहुंच गया है। जनतंत्र व्यवस्था में इलाज के बिना मरने की नौबत नहीं आनी चाहिए, बल्कि इलाज कराके मरना चाहिए।

डाक्टर : उल्टी-सीधी बातें क्यों करते हो ? इलाज तो रोगी को ज़ीवित करने के लिए किया जाता है।

भास्करन : वही तो मैं भी कहता हूं, आप लोग रोगी को इलाज के लिए जीवित रखते हैं। क्या महावत का इलाज नहीं करेंगे ?

डाक्टर : देखो मिस्टर, अगर उसे तुम्हारी वाली बीमारी है तो उसका इलाज फौरन

होना चाहिए।

भास्करन : केशवन, कुंची चाची और मेरी—सबकी बीमारी एक ही है। उसका इलाज भी एक-जैसा है।

डाक्टर : सचमुच ? अगर केशवन और तुम्हारी बीमारी एक ही है तो मेरा इलाज काम नहीं करेगा।

भास्करन : इलाज में जरा-सा फर्क है। मेरी बीमारी में परमु नायर ढाबे वाले का इलाज काम करेगा। शंकू चाचा पर मथाई ठेकेवाले का इलाज काम करेगा। मगर केशवन पर कोई इलाज काम नहीं करेगा।

डाक्टर : मैं कहता हूं, तुम्हें फौरन किसी पागलखाने में भर्ती करना होगा।

भास्करन : डाक्टर साहब, आपकी तफतीश सौ फीसदी सही है। मेरी बीमारी मानसिक ही है। भौतिक में शुरू होकर मानसिक से होते हुए अब पराभौतिक तक पहुंच गई है।

(डाक्टर हाथी के इर्द-गिर्द घूमते हुए बोलता जाता है, इसलिए भास्करन के जवाब पर गौर नहीं करता।)

डाक्टर : पाखाना करता है ?

भास्करन : पिछले कई सालों से नहीं किया। इसलिए खूब आराम है।

डाक्टर : पेशाब करता है ?

भास्करन : इसे देखकर महावत का निकल जाता है।

डाक्टर : *(गौर से देखते हुए)* कोई इसके पास जाए तो मारता है ?

भास्करन : हां, अगर कोई नुकसान पहुंचाने आए तो ... और यह आदत भी अभी-अभी पड़ी है। वैसे बेचारा अहिंसावादी है। *(गाता है)*

टकराकर अहिंसा मणि-कवच से
पलट जाती नहीं कौन-सी तलवार !

कितने खड्ग इससे टकराकर अकारथ गए हैं। रुद्ररु नंबूदरी, वेट्टिकाड मंदिर के देवता...

डाक्टर : मैं यह ट्यूब इस पर लगा सकता हूं ?

भास्करन : हां, हां, क्यों नहीं ? ट्यूब इसपर लगाइए या इसे ट्यूब पर। मेरे ख्याल में माइक्रोस्कोप से जांचना बेहतर होगा। दुबला हो गया है न ! *(केशवन*

से) हिलना मत मेरे भाई, डरने की कोई बात नहीं। यह तुम्हें अच्छा करने आए हैं।

(डाक्टर ट्यूब वगैरह लगाकर केशवन की जांच करता है।)

(*डाक्टर से*) कुछ पता चला ?

(डाक्टर ध्यान दिए बिना जांच रहा है।)

बीमारी का कुछ पता चला ?

डाक्टर : यह बहुत ज्यादा कमजोर है।

भास्करन : और इसका दिल ?

डाक्टर : दिल बहुत अच्छा है।

भास्करन : देखा, बस यही इसकी बीमारी है।

डाक्टर : क्या ?

भास्करन : दिल का अच्छा होना

यह दुनिया उनकी, जो बेदिल होते हैं।
हारता है कदम-कदम पर इंसान
जिसका दिल अच्छा होता है।

डाक्टर : तो क्या शरीर की कमजोरी और खारिश इसकी बीमारी नहीं ?

भास्करन : मंदिर कमेटी, लट्ठे उठवाने वाला ठेकेदार और महावत सबका ख्याल है कि इसकी बीमारी घमंड है। लेकिन कुंची चाची, मैं और कंबर इस बात को नहीं मानते।

(डाक्टर कुछ सोचता हुआ हाथी के इर्द-गिर्द घूमता है।)

डाक्टर : सांस की तकलीफ ?

भास्करन : अब पकड़ी न असली बीमारी ! पिछले पचास साल में कौन-सी घड़ी थी जब इसका दम न घुटा हो।

डाक्टर : सच ! दम घुटने पर क्या बेहोश भी हो जाता है ?

भास्करन : हां, जब लोग इसके पास आकर होश खो बैठते हैं तो बेचारे का दम घुटता है।

डाक्टर : *(कुछ सोचता है)* हूं, तो जब दम घुटता है, खारिश बंद हो जाती है।

खारिश होने लगती है तो घुटन रुक जाती है। अब समझा, इसे अलर्जी है।

भास्करन : अलर्जी ! अलर्जी माने किसी खास चीज का रास न आना ! यही न ?

डाक्टर : यह जानने के लिए कि इसे किस चीज से अलर्जी है इसके खून की जांच होनी चाहिए।

भास्करन : इसके बदन में खून हो तब न। यूं खून की जांच के बगैर भी हम कह सकते हैं कि इसे क्या-क्या अच्छा लगता है। बस, गिनी-चुनी दो चार चीज़ें हैं, जैसे—कुंची चाची, मैं, कंबर, बड़ी मूंगफली, केले और चने। लेकिन चाची इस वक्त बीमार है, कमाने वाले सब बेकार हैं तो मूंगफली-केले कहां से आएंगे !

(शंकू नायर का प्रवेश)

शंकू : क्या वह हरामखोर चला गया ?

भास्करन : वह हरामखोर तो चला गया, अब इनका आगमन हुआ है। डाक्टर हैं। केशवन का इलाज करने आए हैं।

शंकू : केशवन का इलाज करने ? इन्हें और कोई काम नहीं है क्या ?

भास्करन : आल केरल केशवन कौंसिल ने भेजा है। बीमारी का पता चल गया है।

शंकू : वही घमंड ?

भास्करन : हां, वही। लेकिन अंग्रेजी में उसे अलर्जी कहते हैं।

शंकू : जैसे शराब को 'वाटीज़' कहते हैं।

डाक्टर : *(चहलकदमी बंद करके शंकू से)* खाने-पीने की कुछ चीजें, कुछ सुगंधित पदार्थ और कुछ आवाजें भी अलर्जी पैदा करती हैं। इसलिए काजू, घी, शहद और अंगूर देने से परहेज किया जाए।

भास्करन : यह तो बड़ी मुश्किल हो गई ! यह सब बंद कर दें तो बेचारा खाएगा क्या ? क्या इसे स्वर्ण भस्म और सिद्ध मकरध्वज दे सकते हैं ?

डाक्टर : इसे धूप और अगरबत्ती की सुगंध से दूर रखा जाए।

भास्करन : रेशमी कपड़े, सुनहरी झालरें, जरी के दुपट्टे—इनका इस्तेमाल करने में कोई एतराज है ?

डाक्टर : बिलकुल नहीं। बांसुरी की तान भले ही कान में पड़ जाए पर ढोल-नगाड़े

की आवाजों से इसे दूर रखा जाए।

भास्करन : बहुत बढ़िया ! गालियां शायद इसकी सेहत के लिए अच्छी हों। क्यों, डाक्टर साहब ! अगर हों तो मिस्टर महावत के पास धुआंधार गालियों का अनमोल खजाना है।

शंकू : और क्या, इस हरामी के बच्चे को सुबह-शाम दोनों वक्त रामायण का पाठ और धार्मिक प्रवचन सुनवाऊं ?

भास्करन : तुम्हारे पास मिट्टी की महक वाले प्यारे-प्यारे शब्दों की कोई कमी नहीं है। उनके होते हुए भागवत और रामायण किसलिए, शंकू चाचा ?

डाक्टर : इसकी दुम में पीब जमा हो गई है। मलहम लगाना होगा। आइंटमेंट लिख देता हूं, एक हफ्ते के लिए।

(बैग लेकर हाथी के पीछे जाता है। तभी ज्योतिषी किट्टु पणिक्कर दाखिल होता है। अधेड़-उम्र का किट्टु पणिक्कर परंपरागत ज्योतिषी की वेषभूषा में हैं। कंबर उसके पीछे पड़ा है।)

कंबर : अरे, लाटरी टिकट नहीं तो एक भगवद्गीता ही ले लो।

ज्योतिषी : अरे जा जा ... सारी गीता मुझे याद है, शुरू से अंत तक। कहो तो सुना दूं।

कंबर : अच्छा, तो फिर वात्स्यायन का कामसूत्र ले लो।

ज्योतिषी : शिव-शिव ! किसका नाम ले लिया ! कामसूत्र से मेरा क्या काम ?

कंबर : वह भी क्या पूरा घोंट रखा है ? चलो सुर्मा या नकली बाल ही ले लो।

भास्करन : अरे कंबर, यह कौन है ?

कंबर : शंकू चाचा को खोजते हुए आ रहा था। ठेके के पास नजर आया, इसे यहां ले आया हूं।

शंकू : अरे, मुझे वहां बुला लिया होता। *(ज्योतिषी से)* चलो, वहीं चलते हैं, वात्स्यायन महाराज !

ज्योतिषी : मैं तो केशवन को देखने आया हूं।

भास्करन : आपका परिचय ?

ज्योतिषी : मुझे भिषगाचार्य, ज्योतिषी किट्टु पणिक्कर कहते हैं। नाम सुना होगा ?

शंकू नायर : क्या कहा ? मुझसे मिलने आए हो या उस घमंडी को देखने ?

ज्योतिषी : सुना, केशवन का हाल ...

शंकू : धत् तेरे की ! मैंने सोचा, लट्ठे ढोने आया है।

ज्योतिषी : केशवन का दुख दूर करने के लिए ...

भास्करन : समाचार-पत्र में केशवन के रोग का समाचार पढ़कर दुख हुआ होगा !

(हाथी के पीछे डाक्टर को खड़ा देखकर कंबर उस ओर लपकता है।)

ज्योतिषी : अखिल केरल केशव सेवा समिति ...

भास्करन : क्या कहा ?

ज्योतिषी : सहृदय जनों ने मिलकर अखिल केरल केशव सेवा समिति बनाई है। समिति की ओर से केशवन का उद्धार करने के लिए भेजा गया हूं।

भास्करन : बाएं या दाएं ?

ज्योतिषी : दाएं, बाएं, आगे-पीछे।

शंकू : अरे, अक्ल से काम ले। महामूर्ख ! यह पूछ रहा है तुम्हारी समिति ... तू क्या पूछ रहा था, भास्कर?

भास्करन : वामपंथी या दक्षिणपंथी ?

ज्योतिषी : मध्यपंथी है। वामपंथी भी नहीं, दक्षिणपंथी भी नहीं। मगर दृष्टि दोनों तरफ है।

(ज्योतिषी माथे पर ऐनक चढ़ाए हाथी का मस्तक गौर से देखता है। हाथी के पीछे कंबर और डाक्टर बातें कर रहे हैं।)

कंबर : जेंटलमैन, कलश पूजा के लिए डोनेशन दीजिए। फार गोल्डन कलश ...

डाक्टर : इसे ऐसी जगह खड़ा करना चाहिए जहां फ्रेश एयर यानी खुली हवा खूब मिलती रहे।

कंबर : लाटरी लेंगे ? नहीं तो रामायण लीजिए। चुनाव का मैनिफेस्टो है ... कामसूत्र देखेंगे ?

डाक्टर : स्टमक वाश के बाद दवाई शुरू करना उचित होगा।

(कोई आवाज सुनकर ज्योतिषी अंदर की ओर देखता है।)

ज्योतिषी : यह कौन है, जो गजराज की परिक्रमा कर रहा है ?

भास्करन : एक डाक्टर है।

ज्योतिषी : घोर अनर्थ ! अरे, यह मंदिर का हाथी भगवान का वाहन है। इसे अंग्रेजी चिकित्सा से कोई लाभ नहीं मिलने वाला। यह मंदिर का हाथी है, इसलिए 'दैवी प्रश्न' के बाद ही कोई इलाज ढूंढना होगा। समिति सनातन परंपराओं को मानती है, इसीलिए तो मुझे यहां भेजा है।

(बरगद के चबूतरे पर बैठता है, शंख-कौड़ियां वगैरह निकालकर प्रश्न-ज्योतिष शुरू करता है।)

शंकू नायर : कुंची पिछले पांच साल से छाती के दर्द से मरी जा रही है। दयालु लोग एक समिति बनाकर उसका इलाज क्यों नहीं करवाते ?

भास्करन : इसलिए कि कुंची चाची की बीमारी की खबर अखबारों में नहीं छपती। 'हमारे संवाददाता' को आने दो। उससे कहेंगे।

शंकू नायर : ना भई ना ! उस शैतान को यह बात बतानी ही नहीं। अगर उससे कहो कि कुंची की छाती में दर्द है तो लिखेगा, ' दिन-रात महावत की लातें और घूंसे खाने से महावत की पत्नी को हृदय-रोग हो गया।' फिर तो लोग मुझे राह चलने नहीं देंगे।

(डाक्टर मंच पर आता है। पीछे-पीछे कंबर।)

डाक्टर : हां, नींबू का रस। रोजाना बीस नींबू निचोड़कर सुबह-सुबह गरम पानी में पिला दें।

शंकू : वाह, वाह ! क्या इलाज है ? मान गए, डाक्टर साहब ! बात आपने सही पकड़ी कि सुबह खट्टी चीज पिलाने से घमंड कम हो जाता है। लगान न देने वाले को इमली खिलाए जाने से टैक्स उगल देता है। डाक्टर साहब, इसके लिए नींबू काफी नहीं है, कच्ची इमली देनी चाहिए। खट्टी-से-खट्टी इमली खिलाओ, फिर ढोएगा पाजी लट्ठ।

(डाक्टर पीछे जाता है। ज्योतिषी एक तख्ते पर शंख और कौड़ियां बिछाकर प्रश्न-ज्योतिष की गणना में व्यस्त है। कंबर ज्योतिषी को देखता खड़ा रहता है।)

ज्योतिषी : 'भूत-प्रेत-पिशाच दर्शनवशात् रोगम् समेति ध्रुवम्' लक्षण-दीपिका के इस वाक्य के आधार पर लगता है कि भूत-प्रेत देखकर यह डर गया होगा।

भास्करन : इस बिचारे ने न जाने कितने वर्षों से भूत-प्रेत के अलावा किसी और को देखा ही नहीं। कमजोरी के साथ भय भी बहुत ज्यादा है।

(कंबर धीमी आवाज में कहता है : 'आज तो यह एक एक करके तीन भूत देख चुका है। इनमें एक को देखना ही पर्याप्त था।')

ज्योतिषी : लग्न में मंगल का स्थित होना, छठे स्थान के स्वामी का निर्बल होना, चौथे स्थान के स्वामी और आरोग्यकारक बुध का शत्रु स्थान में खड़ा होना—इन सब योगों के चलते बदहजमी, गुल्म, आदि रोग होते हैं।

अजीर्णी गुन्मामयमूलमेति
कुजे विलग्ने विबलेरिनाथे।

यही वाक्य इसका प्रमाण है। देवता बहुत रुष्ट हैं इससे। क्या मैं इसके निकट जा सकता हूं ?

भास्करन : बशर्ते कि कुंडली के अनुसार अपमृत्यु-योग न हो।

ज्योतिषी : भई, तुम भी बड़े हाजिरजवाब हो।

(हाथी के मस्तक को ध्यान से देखते हुए)

जातो भुक्नि विरोध रोगरहितो
रंध्रेश्वरे दुर्बले
लग्ने पापनिरीक्षिते परिभव -
स्थाने सुभन्देक्षिते
चन्द्रे रिपुस्थानयो
जातः शूल विसर्पमेति दिनकृत्
चन्द्रारयुक्ते यदा।

चन्द्रचूड़ शिवजी का कोप है इसके ऊपर। रीढ़ का दर्द, वात रोग, खारिश और भगंदर इसी कारण हैं।

(डाक्टर फिर हाथी के पीछे से आता है)।

डाक्टर : इसे ठंडे पानी में बिलकुल न नहलाया जाए। पानी गर्म करके उसमें पोटेशियम परमेंगनेट डालने के बाद टावल-बाथ देना ठीक रहेगा।

शंकू : हां-हां, क्यों नहीं, गुलाबजल में चंदन डालकर लेप भी करेंगे। ओह, जिसे देखो, मुझ पर हुक्म चला रहा है।

डाक्टर : दुम में जो दवा लगाओगे, कहीं वह तुम्हारे बदन में न लग जाए, होशियार रहना।

(बैग से कागज लेकर लिखता है।)

ज्योतिषी : देवता बहुत ही क्रोधित हैं।

शंकू : यह बिलकुल ठीक है। जरूर देवता नाराज होंगे इससे ! साले ने कितने देवताओं की मूर्तियां तोड़ी हैं ! ऐसे में देवता क्या इससे प्यार करेंगे ?

भास्करन : ना, मैं नहीं मानता इस बात को। इस पर देवताओं की कृपा भी अवश्य होनी चाहिए। इसने अभी तक कितने देवता ढोए हैं—आठ-आठ, दस-दस आदमी इसके सिर और पीठ पर चढ़े रहते थे। छत्र छवाते, चंवर डुलाते घंटों खड़े होकर इस बेचारे के साथ क्या-क्या न करते थे, फिर भी इस बेचारे ने उन देवताओं के सिर न फोड़े।

डाक्टर : *(लिखते-लिखते)* अलर्जी और एक्जीमा दोनों उलझ गए हैं, पेचीदे ढंग से ...

ज्योतिषी : *(बात काटते हुए)* प्रमेह और गुल्म का प्रकोप इसलिए हुआ है कि शुक्र समक्षेत्र में है। इसका फल बताया गया है :

समर्क्षगस्यापि सितस्य दाये
प्रमेह - गुल्माक्षि-गुद प्ररोगः
किंचित् सुखं, भूपति वह्नि चौरैः
भयं, स्वनामांकित गद्य-पद्यम्।

इसी लिए प्रमेह गुल्म आदि बीमारियों के अलावा राज-भय भी बना रहता है। जनतंत्र में राजा का स्थान सरकारी अधिकारियों ने ले लिया है। इसलिए अधिकारियों के द्वारा उत्पीड़न, पंचायत सदस्यों की अप्रसन्नता आदि सहनी पड़ेगी। यही नहीं, इसके नाम से गद्य और कविताएं बनेंगी। देखा नहीं, इन दिनों यह अखबारों में खूब छप तो रहा है।

डाक्टर : अलर्जी और खारिश के साथ-साथ होने का नतीजा होता है ...

ज्योतिषी : जितना छपा है उतना काफी नहीं। आगे भी इस पर किताबें रची जाएंगी, काव्य-नाटक बनेंगे।

शंकू : हमारा यह वात्स्यायन भी कमाल करता है। अरे, सुनो, यह खड़ा है न, भास्कर ! इसने गद्य-पद्यमय कथा लिख डाली है केशवन पर।

भास्करन : मैंने क्या लिखा है ? आगे चलकर इससे भी बड़े-बड़े ग्रंथ लिखे जाएंगे।

संवाददाताओं और विशेष प्रतिनिधियों का ध्यान केशव प्रकरण पर केंद्रित है। वे लोग उत्सुकता से देख रहे हैं कि यह प्रसंग कौन-सा मोड़ लेने वाला है। मंदिर कमेटी के चंगुल से केशवन छूट पाएगा या छुटकारा मिलने से पहले ही खड़े-खड़े वह ढह जाएगा। कमेटी ने केशवन को मुक्त किया, तो वह ज्यादा बदनाम नहीं होगी। केशवन ढह गया तो पूछो नहीं। पर दोनों ही स्थितियों में केशवन ही कथा-नायक रहेगा, इस पर खूब सारा लिखा जाएगा।

डाक्टर : अलर्जी और खुजली ...

ज्योतिषी : *(जैसे मर्म की कोई बात समझ में आ गई हो)* हां, तो यह हुई न बात। यह बंधन से कैसे बच सकता था, जब बुध तृतीय राशि पर आ जाता है।

चिन्ता व्याकुलता त्रिदोषजनिता
रोगो बलात् बंधन -
व्याप्त क्लेश परम्परा परिभव
सर्वस्व हत्यामृति

भास्करन : बात समझ में नहीं आई।

ज्योतिषी : कैसे समझ में आएगी ? देवभाषा को दूर फेंककर असुर-भाषा के पीछे जाने वालों की यही दुर्गति होती है, संस्कृति का ह्रास ! बुध जब तीसरे स्थान पर चला जाता है...पता है, बुध कौन है ? बुध है विद्या, बुद्धि। आई बात समझ में ? इसका फल है, जो बुद्धिमान और विवेकशील होते हैं, उन्हें चिंता, व्याकुलता, विवशता के अलावा त्रिदोष से होने वाली बीमारियां, बंधन में पड़ना, हत्या, मृत्यु, आदि से पीड़ित होना पड़ता है।

भास्करन : विधि-विधान महान ही है। जो बुद्धिमान और विवेकशील होते हैं उन पर यह सब घटित होना अनिवार्य है। यदि उन पर चिंतन नामक रोग भी हावी हो जाए तो उसके फलस्वरूप बंधन मिलता है, मृत्युदंड भी मिल सकता है। स्वतंत्र चिंतक होने के कारण, गुरुजी के अनुसार, केशवन को बंदी होना पड़ा।

ज्योतिषी : 'त्रिदोष जनिता रोगाः'। त्रिदोष से मतलब है वात, पित्त और कफ और उनके विकार से होने वाले रोग।

भास्करन : वह जमाना लद गया, गुरुजी ! जब वात, पित्त, कफ को त्रिदोष कहा

जाता था। आज त्रिदोष से मतलब है—वर्ग-वर्ण-वंश का कोप। वर्ग से अभिप्राय है आर्थिक आधार, वर्ण से मतलब है जाति का आधार और वंश का मतलब है सगे-संबंधियों के आधार पर भेदभाव की भावना। इनसे पैदा होनेवाली बीमारियां हैं—घुटन, निराशा और मोहभंग; इनके कारण बंधन, क्लेश-परंपरा, हत्या, मृत्यु। अब यह बंधन और क्लेश तक पहुंचा है।

ज्योतिषी : अपनी सूझ-बूझ के अनुसार चाहे कोई अर्थ लगा लो, भई ! किंतु मैं तो वही कहूंगा जो शास्त्र में लिखा है और मेरे गुरु जी ने पढ़ाया है। नए ग्रंथ और नए गुरुओं की बातें आप लोग जानो।

भास्करन : दोनों रास्ते एक ही मंजिल में ले जाते है—क्लेश-परंपरा, हत्या और मृत्यु।

डाक्टर : और इस बात का खास ख्याल रखें कि हाथी की सूंड़ को गर्द-मिट्टी से दूर रखा जाए।

शंकू : *(हंसता है)* अरे, इसका तो सिर फिर गया है। कहता है, हाथी की सूंड़ को मिट्टी से दूर रखो। सुना नहीं ? 'गजवर नहीं अघाता धूलि-स्नान से।'

ज्योतिषी : देवताओं को प्रसन्न करने का उपाय शीघ्र ही करना होगा। हर शिव मंदिर में अभिषेक और सहस्रभोज। हर विष्णु मंदिर में अलंकार सेवा। हर देवी मंदिर में दुर्गा-पाठ।

डाक्टर : पचास संतरे के रस में दो किलो ग्लूकोज घोलकर रोजाना पिलाना चाहिए।

ज्योतिषी : गणपति हवन .... लगातार बारह दिन।

डाक्टर : *(सूंड़ की बाईं तरफ सटकर)* पेनसीलीन की गोलियां - बत्तीस।

ज्योतिषी : *(सूंड़ की दाईं तरफ सटकर)* महाकाली मंदिर में सप्तशती पाठ। वृषभ-दान।

डाक्टर : स्ट्रेप्टोमाइसिन के इंजेक्शन।

ज्योतिषी : नागराज के मंदिर में पूजन ... सर्पगान।

डाक्टर : वाटरबरीज़ कंपाउंड।

ज्योतिषी : मृत्युंजय महामंत्र का जाप।

डाक्टर : मल्टी विटामिन की गोलियां।

ज्योतिषी : भागवत सप्ताह का आयोजन।

डाक्टर : क्लोरोमाइसीटिन।

ज्योतिषी : शिव-सहस्रनाम।

डाक्टर : टेरामाइसिन।

ज्योतिषी : काले तिल का हवन।

(एक साथ)

डाक्टर और ज्योतिषी :
एम्पीसिलिन, महारुद्र।
स्ट्रेप्टान, हवन।

(हाथी डाक्टर और ज्योतिषी दोनों को सूंड में लपेटकर निगल जाता है। 'हाय मर गए' की चीख के साथ दोनों हाथी के पेट में चले जाते हैं। भास्करन और शंकू नायर सुन्न खड़े रहते हैं।)

भास्करन : *(थोड़ी देर बाद केशवन को गौर से देखते हुए)* बुरी बात है केशवन, तुमने कतई अच्छा नहीं किया। अब लोग तुम्हें आदमखोर भी कहने लगेंगे।

(हाथी हां में सिर हिलाता है।)

सपने में भी नहीं सोचा था, तुम ऐसा काम करोगे। आज तक नहीं सुना है, कहीं हाथी आदमी को निगल सकता है। *(शंकू नायर के पास जाकर)* शंकू चाचा, अफसोस मत करो। शोक करने से क्या फायदा ? जो होना था हो गया। होनी को कोई टाल नहीं सकता।

(कंबर भागा-भागा आता है।)

कंबर : क्या हुआ ? क्या हुआ ?

भास्करन : केशवन से एक गलत काम हो गया। यह डाक्टर और ज्योतिषी दोनों को निगल गया।

कंबर : गजब कर दिया न ? अब बदहजमी की शिकायत भी होगी न गुरु ! सचमुच गलत काम कर दिया।

भास्करन : चाचा ! शोक मत करो। अब दुखी होने से कोई फायदा नहीं है।

(पीछे से जोर की आवाज) कोई है वहां ?

भास्करन : *(मुड़कर देखता है)* अरे, कौन है ?

हाथी के पेट से डाक्टर की आवाज : मैं हूं डाक्टर।

ज्योतिषी की आवाज : मैं भी हूं ज्योतिषी।

भास्करन : कहां से बोल रहे हैं ?

डाक्टर की आवाज : हाथी के पेट से।

शंकू : *(चौंकता है)* ऐं ! हाथी के पेट से ? तुम दोनों मरे नहीं ?

डाक्टर : नहीं, मुझे अभी-अभी हाथी की बीमारी के असली कारण का पता चला है। इसकी बीमारी अलर्जी नहीं, बल्कि भूख है, भूख। इसके पेट के अंदर, सालों से कोई आहार नहीं पहुंचा है। कमेटी के हिसाब से भरपेट खाना, मगर केशवन के पेट में भूख ! भूख का इलाज हो जाए तो सारी बीमारियां दूर हो जाएंगी। अगर भूख शांत नहीं होगी तो वह और अधिक लोगों को खा डालेगा। यह असलियत जनता के सामने रख देना।

भास्करन : *(दो कदम आगे बढ़कर)* सज्जनो ! केशवन की बीमारी दरअसल भूख है। हालांकि विज्ञान को जरा क्लेश सहना पड़ा, फिर भी खुशी है कि वह आज बीमारी की तह तक पहुंचने में कामयाब हुआ है और सचाई का पता लगा लिया है। भूख का समाधान होते ही बीमारी दूर हो जाएगी। नहीं तो सब लोगों पर संकट छा जाएगा। वह सारी जनता को निगल जाएगा।

(ज्योतिषी की आवाज) : मुझे भी एक सत्य का उद्घाटन करना है।'

भास्करन : कौन हैं ? ज्योतिषी श्रीमान पणिक्कर ?

(पणिक्कर ज्योतिषी की आवाज) : हां, मैं ज्योतिषी बोल रहा हूं, पता लग गया है, केशवन के रोग का वास्तविक कारण कौन-सा है। इस पर देवता क्रोधित नहीं है, इसके ग्रह भी ठीक हैं। इसकी बीमारी क्षुधा है, यानी भूख। शास्त्र में ठीक ही कहा गया है—'नास्ति क्षुधासमं रोगम्'। भूख के समान भयंकर रोग कोई नहीं है। भूख से क्रोध पैदा होता है, क्रोध से प्रतिहिंसा और उससे आदमी खूंखार बन जाता है। भाइयो, मूल कारण भूख है। भूख का इलाज हो जाने पर बाकी बीमारियां अपने आप टल जाएंगी। समय रहते भूख की समस्या का समाधान नहीं किया गया तो यह हिंसा की प्रवृत्ति प्रचंड रूप धारण करेगी और यह एक एक

करके सबको हड़प लेगी। यह मेरा संदेश जनता तक पहुंचा देना।

भास्करन : *(जनता की तरफ मुखातिब होकर)* सज्जनो और देवियो, आखिर पता चल गया है कि केशवन की बीमारी भूख है। इस पर देवता की कोई नाराजगी नहीं है। थोड़ा विलंब से ही सही, हमारी सनातन संस्कृति रोग-कारण की तह तक जाने में कामयाब हो गई है। यह हमारे लिए खुशी की बात है कि आधुनिक विज्ञान और प्राचीन संस्कृति दोनों आखिर एक ही नतीजे पर पहुंच गए हैं। दोनों एक स्वर से कह रहे हैं। सभी बीमारियों का मूल कारण भूख है। भूख मिट जाए तो हर तरह की परतंत्रता से मुक्ति मिलेगी।

(रंगमंच पर पीछे की तरफ कोई चीज गिरने की आवाज)

क्या है ? क्या हुआ ?

आवाज : *(डाक्टर और ज्योतिषी)* कुछ नहीं, यह हम हैं डाक्टर और ज्योतिषी। हम बाहर निकल आए हैं। केशवन ने हमें रिहा कर दिया है—पीछे से।

शंकू : ऐं ! रिहा कर दिया। अब तो केशवन पर कोई केस नहीं बनेगा।

कंबर : पीछे से कैसे निकले ? दोनों मैल के साथ गिरे होंगे।

भास्करन : बाहर आ गए ? तो इधर आइए न ? जनता आप दोनों के दर्शन के लिए लालायित हैं।

कंबर : क्यों नहीं ? विदेश-यात्रा से जो लौट रहे हैं !

शंकू : चलो, अब केशवन को कोई फंसा नहीं सकता केस में।

आवाज : हम जनता के सामने आ नहीं सकते।

भास्करन : क्यों ? कोई, खास वजह ?

डाक्टर : हम वैसे खड़े हैं जैसे पैदा हुए थे।

ज्योतिषी : यानी नंगे हैं।

शंकू : कहा था न, बेचारा केशवन बहुत भला है। किसी को तंग नहीं करता।

भास्करन : आप दोनों नंगे हों तो इधर मत आना।

कंबर : इधर आने को कहो गुरु ! मजा आ जाएगा।

शंकू : तुम सब लोग यहीं खड़े रहो। मैं जाकर देख आता हूं। *(पीछे की ओर चलता है, झांकता है और पेट पकड़कर हंसता है)* आंखें बंद कर लो

भास्कर, ये दोनों ऐसे खड़े हैं जैसे अभी-अभी मां के पेट से निकले हों। वैसे ही खड़े हैं जैसे महाकवि पेण्मणि ने गाया है।

आवाज : हमें आने दो, हम आएंगे।

कंबर : कह दिया न, आ जाओ बेधड़क।

शंकू : रुको भई, वहीं ठहरो। कहीं कुंची आ जाए तो ...

आवाज : हमें आना है, हम आएंगे।

भास्करन : सब्र करो ... बस दो मिनट के लिए। आदरणीय सज्जनो, कहीं आप इन्हें देख लें तो आपको शर्म आएगी, लज्जा से आंखें बंद कर लेंगे। ... *(दोनों तरफ देखते हुए)* अरे, कौन है ? पर्दा, जल्दी गिरा दो, पर्दा ! *(पर्दा आहिस्ता-आहिस्ता नीचे आता है। रंगमंच के पीछे शोरगुल। हम आएंगे, हमें आना है।' 'अभी मत आना, वहीं रुक जाओ' की आवाजें। शंकू नायर और कंबर ठहाका मारकर हंसते हैं, इससे लगता है कि आखिर दोनों प्रकट हो गए।)*

(पर्दा)

मुद्रक : इम्प्रेस आफसेट इ - १७, सेक्टर - ७, नोएडा।